द्वितीय अध्याय

साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण : राजनीति के परिप्रेक्ष्य में

द्वितीय अध्याय

साठोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विदेशी आक्रमण : राजनीति के परिप्रेक्ष्य में

भूमिका

आज विश्व के सामने सबसे बड़ी समस्या युध्द और शांति की समस्या है। विशेषता पड़ोसी राष्ट्रों के बीच किसी न किसी कारणवश समय-समय पर युध्द होते दिखाई देते हैं। कभी एक पड़ोसी देश दूसरे पड़ोसी देश पर आक्रमण करता दिखाई देता है। भारत स्वतंत्र होने के उपरान्त इस देश पर जिन पडोसी देशों ने आक्रमण किए उनमें प्रमुख देश हैं - पाकिस्तान और चीन। विवेच्य नाटकों के संदर्भ में विदेशी आक्रमण संबंधी राजनीति के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन प्रस्तुत करना हमारा मुख्य प्रतिपाद्य है।

भारत के पड़ोसी देश

भारत के पड़ोसी देशों में निम्नांकित देशों का समावेश होता हैं जिनकी सामान्य जानकारी इसप्रकार दी जा सकती है -

1· पाकिस्तान

यह देश पहले भारत का ही भाग था। अंग्रेजी साम्राज्य से स्वतंत्रता प्राप्ति के समय कुछ मुस्लिम नेताओं ने देश के बँटवारे की माँग की। 14 अगस्त 1947 को अंग्रेजों ने भारत के मुस्लिम बहुसंख्य वाले दो खंड भारत से अलग करके पाकिस्तान के नाम से पृथक बना दिया। एक खंड पश्चिम में, दूसरा पूर्व में। दोनों के बीच में लगभग 1700 कि·मी·दूरी थी। पूर्वी भाग 1971 में पाकिस्तान से अलग हो गया और बांगला देश के नाम से सर्वप्रभुत्व संपन्न लोकतंत्र बन गया। पाकिस्तान का सबसे बड़ा नगर और बंदरगाह कराची है। उत्तर में रावलपिंडी के निकट देश की नई राजधानी इस्लामाबाद है। पाकिस्तान में पंजाबी, पठान, बलोच और सिंधी

लोग रहते हैं। पाकिस्तान का क्षेत्रफळ 803903 वर्ग कि·मी·इतना है।

2· **चीन**

चीन यह संसार का जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा देश है। यहाँ विश्व की 20% जनसंख्या रहती हैं। यह देश भारत के उत्तर और पूर्व की ओर स्थित है। क्षेत्रफळ में यह हमारे देश से लगभग तीन गुना बड़ा हैं। इसका क्षेत्रफळ 95,96,961 इतना है। पश्चिमी भाग पहाड़ी है। संसार कासबसे ऊँचा तिब्बत का पठार है और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। सुप्रसिध्द हिंदू तिर्थस्थान कैलास पर्वत और झील मानसरोवर तिब्बत में ही है। बेइजिंग (पीकिंग) चीन की राजधानी है। शंघाई और क्वांचाऊ (केंटन) बड़े बन्दरगाह हैं। चीन में स्थित तिब्बत का प्रदेश भारत के सीमावर्ती प्रदेश से संलग्न है।

3· **नेपाल**

बहादुर गोरखों का देश है। यह भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत के खण्ड में स्थित है। हिमालय पर्वत के पार उत्तर की ओर तिब्बत है। नेपाळ चारों तरफ से भूभाग से घिरा हुआ है। इसका उत्तरी भाग महान हिमालय अथवा हिमाद्रि श्रेणी में है। यहाँ संसार की सबसे ऊँची चोटी ऐवरेस्ट है। नेपाल कीराजधानी काठमाँडो है। इसका क्षेत्रफळ 1,40,797 वर्ग कि·मी·हैं।

4· **भूटान**

भारत की उत्तरी सीमा पर पूर्वी हिमालय में स्थित एक छोटा सा देश है। वह संपूर्ण देश पर्वतीय है। तथा उत्तरी भाग 7000 मीटर और घाटियाँ 3500 से 4500 मी·की ऊँचाई पर स्थित हैं। इसका दक्षिण भाग तराई कहलाता है। थिम्फु भूटान की राजधानी और मुख्य नगर है। इनका क्षेत्रफळ 49,421 वर्ग कि·मी· इतना है।

5· **श्रीलंका**

श्रीलंका भारत के दक्षिण में हिन्द महासागर में एक बड़ा द्वीप है, जो एक स्वतंत्र और सुंदर देश है। इसे "पूर्व का मोती" भी कहा जाता है। पाक

जल-डमरूमध्य इसे भारत से अलग करता है। उस जल-डमरूमध्य में समुद्र में डूबी हुई चट्टानों और बालू की एक पंक्ति सी है, जिसे रामचंद्रजी का पुल कहते हैं। श्रीलंका का दक्षिणी मध्यभाग पर्वतीय है, जिसके चारों ओर तट का मैदान है। उत्तरी भाग में मैदान अधिक विस्तृत है। महावेली गंगा श्रीलंका की सबसे बड़ी नदी है। यह त्रिंकोमाळी बन्दरगाह के निकट बंगाल की खाडी में गिरती है। कोलंबो श्रीलंका की राजधानी सबसे बड़ा नगर और पश्चिमी तट पर उत्तम बंदरगाह है। इनका क्षेत्रफळ 65,610 वर्ग कि·मी· इतना है।

6· **बर्मा**

यह देश भारत की पूर्वी सीमा पर स्थित है। बाड़ला देश, चीन, लाओस और थाईलैंड देशों की सीमा भी बर्मा से मिलती हैं। यह भगवान बुध्द के सुंदर मंदिरों अथवा पगोडों का देश हैं। बर्मा एक पर्वतीय देश है। पूर्वी भाग में शान का पठार है। बर्मा की राजधानी रंगून इरावती के डेल्टा प्रदेश में एक सुंदर नगर तथा बन्दरगाह है। मॉडले मध्य बर्मा में पुरानी राजधानी है। इनका क्षेत्रफळ 6,78,036 कि·मी· इतना है।

विदेशियों द्वारा भारत पर आक्रमण

उपर्युक्त पड़ोसी देशों में से पाकिस्तान तथा चीन ने मुख्यतः भारत पर समय-समय पर आक्रमण किए हैं। विवेच्य विदेशी आक्रमण परक नाटकों के संदर्भ में इन पड़ोसी देशों ने जो आक्रमण किए हैं, उनमें जम्मू-कश्मीर तथा नेफा के भूप्रदेश समाविष्ट हैं। नेफा के भू-प्रदेश को ही 1972 से अरूणाचल प्रदेश राज्य नाम दिया गया है। पूर्वी बंगाल, पाकिस्तान का ही हिस्सा था लेकिन 1971 में वहाँ की जनता ने पाकिस्तान के खिलाफ विद्रोह कर मुख्यतः भाषा के तथा रहन-सहन के नाम पर और पाकिस्तान के दबाव के खिलाफ स्वतंत्र राष्ट्र की स्थापना बाड़ला देश के रूप में की है। भारत पर हुए विदेशी आक्रमण संबंधी भौगोलिक क्षेत्र की संक्षिप्त जानकारी इसप्रकार दी जा सकती हैं -

1· जम्मू कश्मीर-माहिती नकाशा

2· नेफा - माहिती नकाशा

3· बांगला - माहिती नकाशा

भारत पाकिस्तान और बाङ्ला देश के नक्शा में कुछ युध्द के क्षेत्रों को देखा जा सकता है -

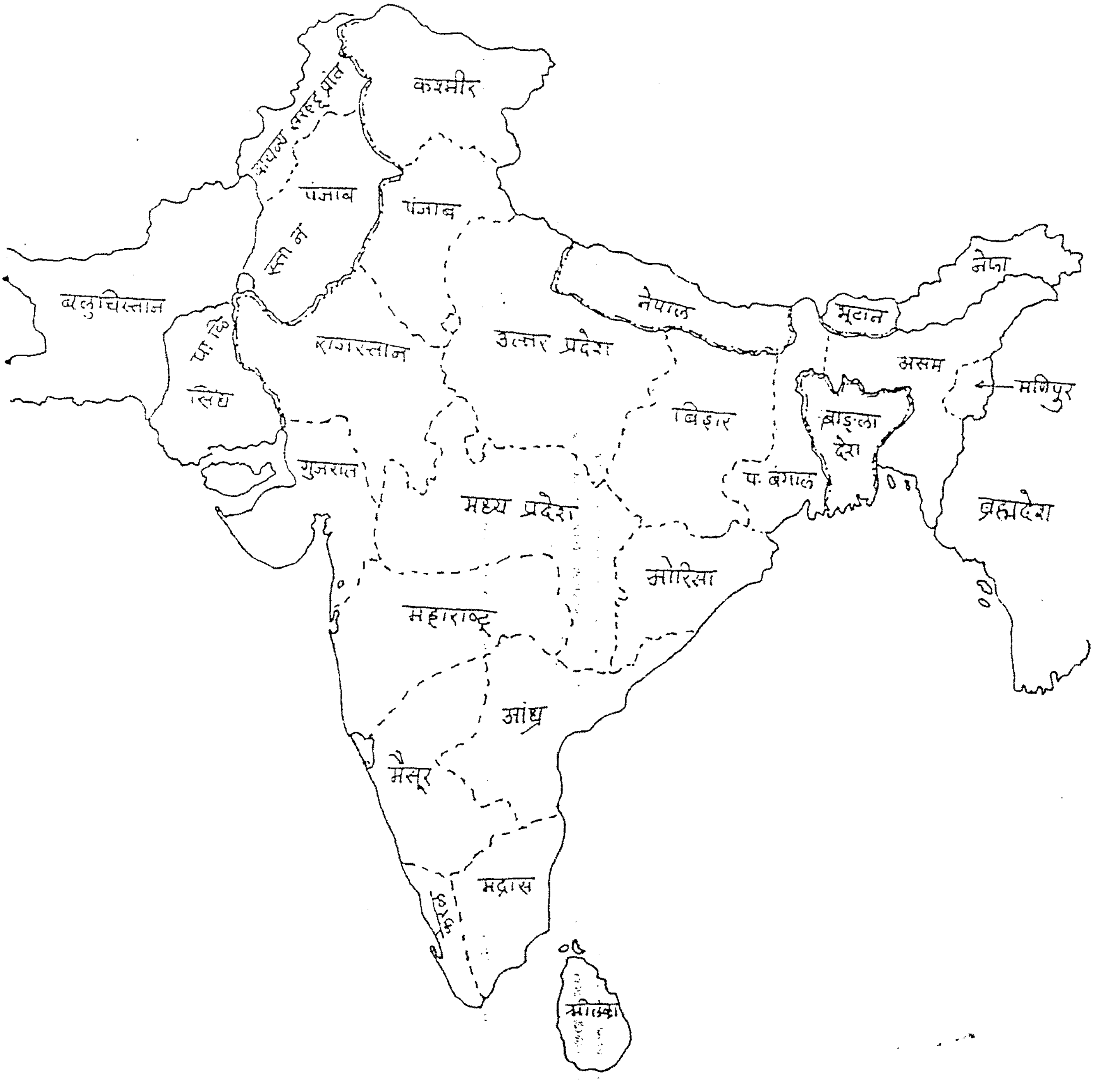

1· **जम्मू कश्मीर**

जम्मू और कश्मीर राज्य जो संसार भर में सबसे अधिक सुंदर प्रदेशों में से है, भारत के उत्तरी भाग में स्थित हैं। इसके उत्तर में चीन का सिक्यांग प्रदेश और अफगाणिस्तान और कुछ दूरी पर रूस है, पूर्व की ओर चीन का तिब्बत प्रदेश है, दक्षिण पूर्व में भारत के हिमाचल प्रदेश और पंजाब राज्य हैं और दक्षिण पश्चिम तथा पश्चिम की ओर पाकिस्तान है। कश्मीर की राजधानी श्रीनगर है। इसका क्षेत्रफळ 2,22,236 वर्ग कि·मी· हैं।

पाकिस्तान द्वारा जम्मू कश्मीर पर किए गऐं युध्द के स्थल के नामों का उल्लेख राजकुमार लिखित "हाजीपिर का दर्रा" नाटक में किया गया है। यथा -
हाजीपीर का दर्रा, बेदोरी चौकी, शंख चौकी।

2· **नेफा (अरूणाचल प्रदेश)**

अरूणाचल प्रदेश के उत्तर में तिब्बत की सीमा उत्तरी पूर्व भाग में भूटान है। दक्खन में असम राज्य का सीमा प्रदेश है। अरूणाचल के कुछ सीमा रेषा में बर्मा का भाग है। उत्तर पूर्वी भाग में चीन का सीमांचल प्रदेश है और उसकी राजधानी का शहर इटानगर है। जनवरी 1972 में केंद्रशासित प्रदेश बनाया गया। इसका क्षेत्रफळ 83,743 वर्ग कि·मी· हैं।

चीन द्वारा नेफा (अरूणाचल प्रदेश) पर किए गए युध्द के युध्द स्थल के नामों का उल्लेख डॉ·शिवप्रसाद सिंह लिखित "घंटियाँ गूँजती हैं", ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की एक शाम" नाटक में किया गया है। यथा - तवाँग, बोमदि ला, सियांग, लद्दाख, से ला।

चीन के आक्रमणसंबंधी विशिष्ट युध्द स्थलों को निम्नलिखित नक्शें मे दर्शाया गया है -

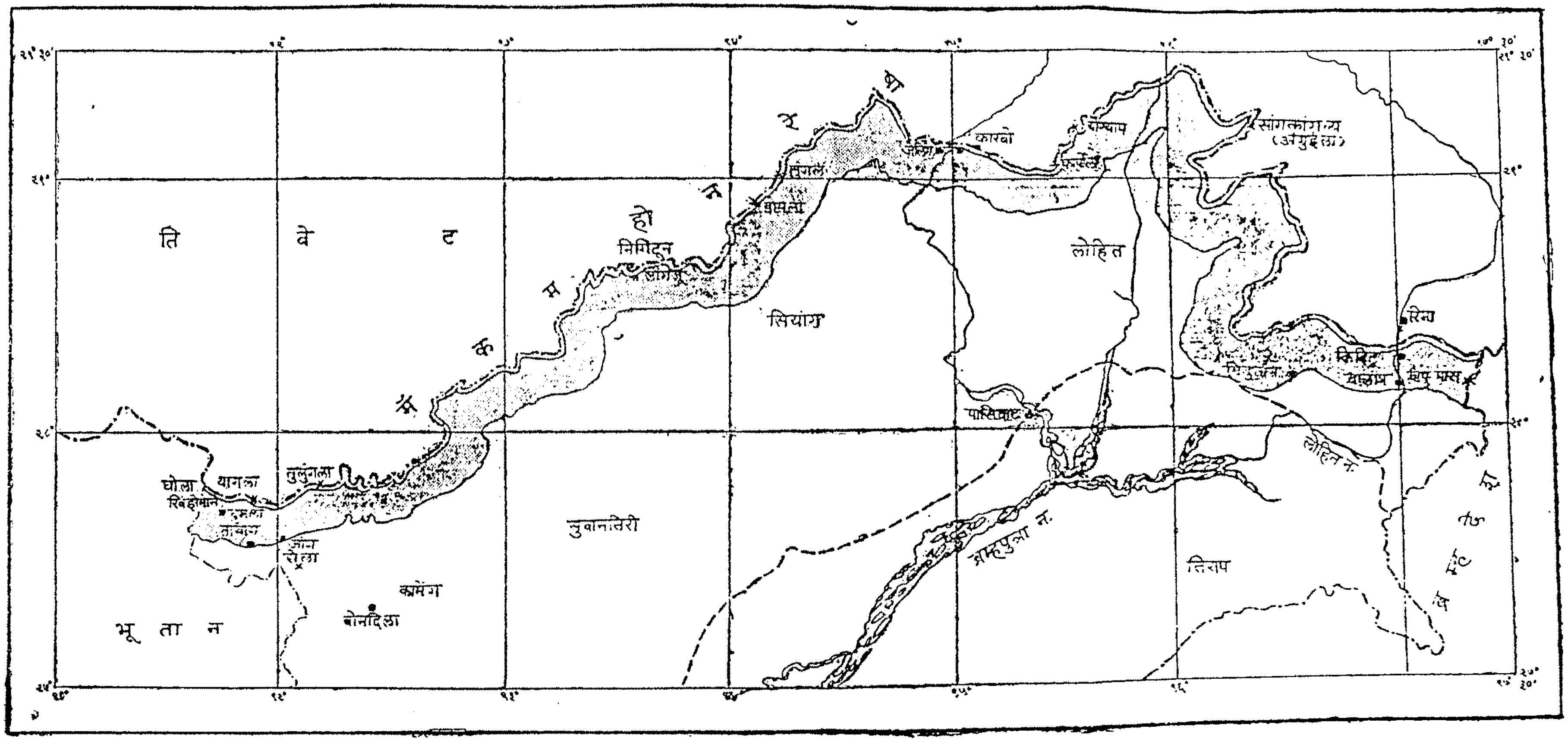

नेफा क्षेत्र के अंतर्गत भारत से जिस बीस किलोमीटर वाली पट्टी से पीछे हटने केलिए कहा गया है वह नक्शे में छायांकित दिखायी गयी है। इससे भारत का तावांग, लोंगेजू, जेलिंग, किबुटु, और वालांग ये स्थान छोड़ने पड़ेंगे।

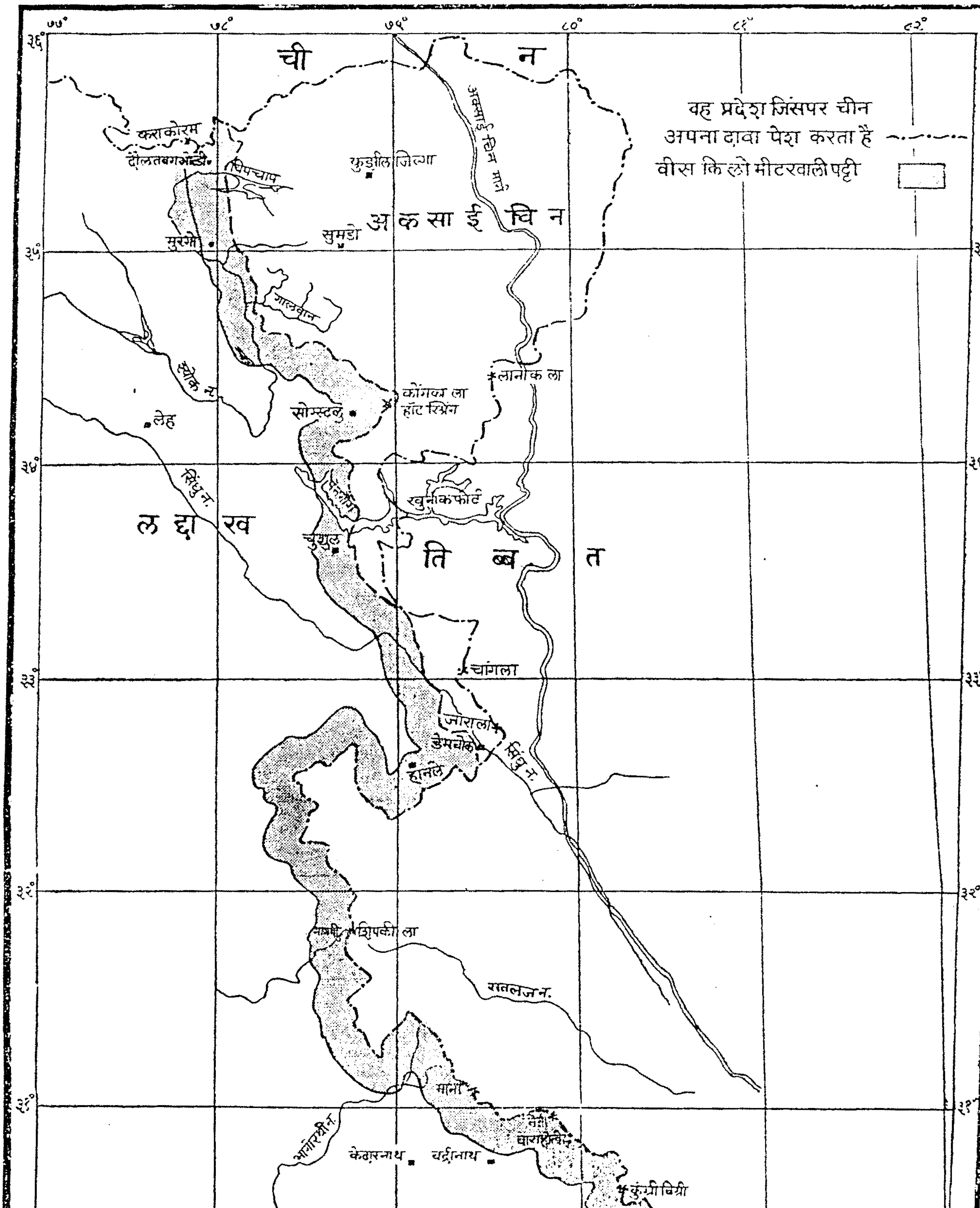

चीन को स्वीकार है कि इस नक्शे में अंकित बीस किलोमीटर वाली पट्टी के अंतर्गत प्रदेश भारतीय है। पर वह इस बात पर जोर दे रहा है कि भारत उसके पीछे हट जाए। इससे भारत को दौलतबेग ओल्डी, मुर्गो, चुशुल, देमचाक, सिपकी दर्रा ये स्थान छोडने पडेंगे।

3· बांगला देश

बांगलादेश हमारे पूर्व में एक पड़ोसी देश है। इसकी तीन ओर की सीमाएँ भारत से मिलती हैं। तथा इसके दक्षिण में बंगाल की खाड़ी स्थित है। इसका अधिकांश भाग गंगा और ब्रम्हपुत्रा के डेल्टा प्रदेश में स्थित है। पूर्वी भाग में स्थित कुछ पहाडी भाग को छोडकर शेष सम्पूर्ण भाग समतल मैदान है। भूमि अत्यंत उपजाऊ है। मैदान का निर्माण गंगा एवं ब्रम्हपुत्रा नदियों की लाई हुई मिट्टी से बना है। नदियों और नदी शाखाओं का यहाँ जाल सा बिछा हुआ हैं।

ढ़ाका बांगला देश का सबसे बड़ा नगर और राजधानी है। यहाँ प्राचीन काल में अत्यंत महीन मलमल बनती थी। अब यह पटसन उद्योग का केंद्र है। चटग्राम और चालना बांगला देश के मुख्य बंदरगाह हैं।

बांगला देश का क्षेत्रफल 3·998 वर्ग कि·मी·है। पाकिस्तान द्वारा बाड़ला देश पर किए गए युध्द के स्थल के नामों का उल्लेख राजकुमार लिखित 'जय बाड़ला' नाटक में किया हैं - ढाका शहर की धान मंडी।

विदेशी आक्रमण : विविध उद्देश्य

विश्व के प्रारम्भ से आज तक सबको सताने वाली एक समस्या है - युध्द और शान्ति। भारत शान्ति प्रधान देश है किन्तु इस देश पर समय-समय पर विदेशी आक्रमण होते रहे हैं। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र होने पर इस देशपर कुछ विदेशी आक्रमण हुए हैं। चीन ने 1962 में भारत पर हमला किया। इस हमले का उद्देश्य ज्ञानदेव अग्निहोत्री के "नेफा की एक शाम" नाटक में बताया गया है। सुहाली एक सुंदर चीनी लड़की है। उसका मूल नाम सुंगली है। लेकिन एक गूँगी चीनी जासूस लड़की के रूप में वह भारत में प्रवेश करती है और नेफा में स्थित एक आदिवासी परिवार के घर में रहती है। मातई का बड़ा बेटा नीमों है। उससे वह प्यार का नाटक करती है। नीमों उसके सौन्दर्य की ओर आकृष्ट होकर उससे प्रेम करने लगता है। लेकिन एक दिन भारत का गोरिल्ला सरदार गोंगो को मालूम पडता है कि सुहाली किसी चीनी सैनिक का इन्तजार जंगल में करती रही

है और उसके आने पर उसे बता देती है कि सुबह से पहले सियाँग नदी के पासवाली रसद गाह पर हमला हो जाने वाला है। इस प्रकार सुहाली मामूली लड़की नहीं बल्कि एक चीनी जासूस लड़की है, यह गोगो आदि सबको मालूम पड़ता हैं। गोगो की आज्ञा के अनुसार नीमों उस पर गोली चलाने के लिए तत्पर हो जाता है। तब सुहाली चीन के आक्रमण का, युध्द का उद्देश्य गोगो को दाँत पीसकर बताती है - "हाँ। लाल सितारे को चमकने के लिए उन भेड़-बकरियों का खून चाहिए जो उसके रास्ते में आते हैं। (उन्माद भरे स्वर में) और लाल सितारा बढ़ रहा है। अब उसे चमकने के लिए दूसरे देशों का आसमान चाहिए। (पूरे गले से चीखकर) उसे सब देशों के आसमान चाहिए।"[1] सुहाली के इस कथन से स्पष्ट है कि चीन केवल भारत पर ही नहीं सारे विश्व पर अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करने के लिए ही भारत और अन्य देशों पर हमला करना चाहता है। सुहाली के कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि चीन एक साम्राज्यवादी देश है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत के सामने एक महत्वपूर्ण समस्या है जम्मू कश्मीर समस्या। 1951 में हुई कश्मीर की विधान सभा की बैठक में जम्मू तथा कश्मीर का राज्य भारत संघ का अंग है। लेकिन पाकिस्तान इस बात को नहीं मानता है और इसलिए पाकिस्तान ने 1965 में भारत पर हमला किया। राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" एक राजनीतिक नाटक है। पाकिस्तानी सैनिक कश्मीर में होनेवाले हाजीपीर के दर्रे को अपना ही समझकर कब्जा करने की साजिश करते हैं। पाकिस्तानी मुसलमान मजहब के नाम पर हमला करते हैं। जिस वक्त पाकिस्तानी मुजाहिदों को हिंदुस्तानी सैनिक कहीं भी नजर नहीं आते उस वक्त आपस में झगडने के बिना उन्हें कुछ सूझता ही नहीं। पाकिस्तान के मुजाहिद जालिम खाँ को यह सब तमाशा लगता है। हम यहाँ किस उद्देश्य से आए हैं यह मुजाहिदों को बताते हुए वह कहता है कि पाकिस्तान की जिंदगी का सवाल कश्मीर पर कब्जा करना है और हिन्दुस्तानी मुसलमानों की हिफाजत करना।[2]

डॉ॰रामकुमार वर्मा लिखित "जय बांड़ला" नाटक में पश्चिम पाकिस्तान ने पूर्व पाकिस्तान पर बार-बार अत्याचार किए, स्त्रियों की इज्जत लूटी, धन दौलत

सब कुछ लूटा क्योंकि मशरिकी पाकिस्तान को वह नए तरीके से बसाना चाहते थे। उसमें सभी मग़रिबी पाकिस्तान के लोग होंगे ऐसी उनकी मनोकामना थी। वहाँ एक भी बंगाली आदमी न हो ऐसी उनकी इच्छा थी इसलिए बंगाली लोगों पर अन्याय करके अपना उद्देश्य सफल बनाना चाहते थे। समशेर नामक एक पात्र से युध्द का उद्देश्य स्पष्ट हुआ है - "हमारे सामने सबसे अहम बात यह है कि हमें मशरिकी पाकिस्तान को नए सिरे से बसाना है। उसमें एक भी बंगाली नहीं रहेगा। सब मग़रिबी पाकिस्तान के लोग होंगे। मग़रिब और मशरिक के दोनों हिस्से इन्सान की आँखो की तरह एक ही बात देखें, एक ही बात समझे।"[3] यहाँ युध्द का उद्देश्य मज़हब है।

डॉ॰रामकुमार वर्मा लिखित "जय बाड़ला" नाटक में बांगला देश के युध्द का उद्देश्य स्पष्ट किया गया है। बांगला देश के प्रमुख नेता शेख मुजीबुर्रहमान चटगाँव के भूमिगत केंद्र से संचालन करते हैं। मुक्ति फोज के जनरल मेजर जियाँ खाँ पाकिस्तान के खूनी आक्रमण को रोकने के लिए कमर कसते हैं। एक दिन में पाकिस्तानी सैनिकों ने तीन लाख बंगालियों को मार दिया। यदि यहीं लोग समय आने पर इकट्ठा होकर पाकिस्तानी सेना पर टूट पड़ते तो कही भी उनका नामोनिशान दिखाई नहीं देता। पाकिस्तान को सहायता करनेवाले चीन, अमरीका जेसे देश के लोग दुम दबाकर भाग जाते। बंगाल के मुक्ति फोज के लोगों ने अपना देश पूर्ण रूपेन स्वतंत्र होने तक पाकिस्तानी आक्रमण को रोकने की कमर कस ली। यह सभी बातें सुनकर ढ़ाका विश्वविद्यालय का एक छात्र धीरेंद्रनाथ भी मुक्ति फोज में सम्मिलित होकर देश की स्वतंत्रता के लिए मर मिटना चाहता है। अर्थात यह स्पष्ट है कि 1971 में पाकिस्तान ने बांगला देश पर जो आक्रमण किया उसको हटाना तथा बांगला देश को पूरी स्वतंत्रता प्रदान करना और पाकिस्तान से बांगला देश को मुक्त कर एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है।

बृजमोहन शाह के "युध्दमन" नाटक में युध्दों का सर्वसाधारण उद्देश्य यह बताया गया है कि बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों को अपने काबू में रखे।

युध्द विजिगीषा

आज के वैज्ञानिक आण्विक युग में यह दिखाई देता है कि बड़ी-बड़ी शक्तियाँ छोटे-छोटे देशों पर हमला करके उन्हें जीत लेने की कोशिश करती रही हैं1 विजय पाने की अदम्य लालसा ही बड़ी शक्तियों के मन में हमेशा मौजूद रही है, जिसकी वजह से युध्द होते रहते हैं।

1. युध्द के जिम्मेदार

बृजमोहन शाह के "युध्दमन" नाटक में युध्द का जिम्मेदार कौन है ? इस पर भी विदारक प्रकाश डाला गया है। इस नाटक में दर्शाया गया है कि युध्द के लिए बड़ी-बड़ी शक्तियाँ ही जिम्मेदार होती हैं। कोई सैनिक या लेफ्टिनंट जिम्मेदार नहीं हो सकता। यह लेफ्टिनंट एक मुख्यतया सामान्य युवक होता है, लेकिन उसे अन्य बड़ी शक्तियाँ ही लेफ्टिनंट बना देती है। उसे मशीन गन चलाना सिखाती है और विशेष बात यह है कि यह आदमी लेफ्टिनंट केवल बड़ी शक्तियों के आदेशों के पालन ही करता रहता है। डिफेन्स कौन्सिल के शब्दों में - "यह लेफ्टिनंट तो हमारे अज़ीम मुल्क के उसूलों का शाहकार है, पॉलिसी और जहनियत का बेनज़ीर नमूना मूल्यों और आदर्शों का चिराग।"[4] इससे यह स्पष्ट है कि सामान्य जनता से कोई सैनिक-शिक्षा पाकर लेफ्टिनंट बनता है। बड़ी शक्तियाँ उस पर दबाव डालती है और उसे युध्द में कूदना पड़ता है।

आज के महायुध्द के लिए बड़े राष्ट्र या महाशक्तियाँ ही जिम्मेदार हैं1 प्रस्तुत नाटक का एक पात्र संकटकालीन स्वयंसेवक साफ कहता है कि "दुनिया की बदलती राजनीति की किसी को समझ ही नहीं। महाशक्तियों की निगाहें गिध्द की तरह लगी हुई हैं हमारे मुल्क पर।"[5]

इसमें संदेह नहीं कि आधुनिक विश्वयुध्दों में बड़ी शक्तियों का ही हाथ हैं। छोटे राष्ट्रों को अपने काबू में या वश में रखने के लिए ही यह युध्द किए जाते हैं। इनमें "पॉवर पॉलिटिक्स" सबसे महत्वपूर्ण होता है। यहाँ नाटककार बृजमोहन शाह ने "युध्दमन" नाटक में साम्राज्यवादी राष्ट्रों की ओर ही संकेत किया

हैं कि वे ही छोटे राष्ट्रों पर हमला करते हैं या कभी-कभी शीत युध्द खेलते रहते हैं। चीन, रूस, अमरीका, ब्रिटेन आदि राष्ट्र मुख्यतया साम्राज्यवादी राष्ट्र माने जाते हैं और वे ही आज छिड़ने वाले युध्दों के लिए जिम्मेदार हैं।

2· युध्द की तैयारी

ज्ञानदेव अग्निहोत्री के "नेफा की एक शाम" नाटक मे चीनियों के रसद लूटने का भी एक प्लान किया जाता है। इस समय गुरिल्ला सरदार गोगो नीमों और मातई के बीच कुछ आपसी चर्चा होती हैं इस चर्चा में यह तय किया जाता हैं कि दुश्मनों पर पहरा करने का काम सुहाली करेगी लेकिन मातई इस बात को महत्व न देकर स्वयं बताती है कि सियाँग नदी के पास के काले पहाड़ तक पहुँच जाएगी और दुश्मन पर निगरानी रखने का काम करेगी। रसद चौकी पर हमला करने की गुप्त बात सिर्फ देवल और शीकाकाई को ही मालूम थी। गोगो ने उन दोनों को ही रसद चौकी पर हमला करने के लिए भेजा था लेकिन अचरज की बात यह है कि दुश्मन की रसद चौकी पर हमला होनेवाला है यह बात चीनियों को मालूम हो जाती है तब गोगो गुस्से में आ जाता है और कहता है देवल और शीकाकाई के बिना यह बात किसी को न मालूम होने पर दुश्मन तक कैसे पहुँची अतः गोगो सोचता है कि जरूर हम सब में दुश्मन का एक भेदिया होगा। कुछ समय बाद गोगो के इस प्लान का राज खुल जाता है और पता लग जाता है कि नीमों की प्रेयसी सुहाली ही वास्तव में जासूस है जो नीमों को छोड़कर रात में जंगल गई थी और वहाँ से उसने रसद चौकी पर होनेवाले भारतीय हमले की खबर चीनियों के पास पहुँचा दी थी। इस प्रकार हम देखते हैं कि चीनियों की कूटनीति विचित्र हैं। हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लगाने वाले चीनी इतनी कुटिल नीति को अपनाते हैं कि सुहाली जैसे सुंदरी युवती को भारत भेजते हैं और उससे ही भारतीयों के युध्द के प्लान के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करते हैं। इतना ही नहीं पिछले रात को गोगो के सैनिक दल के जो तेरह आदमी दुश्मनों पर छापे मारते समय मर चुके उसका कारण भी चीनी जासूस सुहाली है।

"नेफा की एक शाम" में नाटककार ने चीनियों की एक अलग युध्दनीति पर भी प्रकाश डाला है। युध्द के तैयारी के संबंध में वे एक ऐसी चाल चलाते हैं कि जिससे सीमांचल की भारतीय जनता फँस जाय। प्रस्तुत नाटक में यह दर्शाया गया है कि चीन के कुछ लोग साधारण लोगों के वेश में भारत के सीमांचल प्रदेश में प्रवेश करते हैं और वहाँ की सामान्य जनता को कुछ चीजें मुफ्त में बाँट देते हैं। प्रस्तुत नाटक में इसका उल्लेख इस तरह किया गया है कि मातई का बड़ा बेटा नीमों जब सुहाली के साथ सीमांचल प्रदेश में घुमता है, तब चीनी लोग सुहाली के टोकरी में एक कंबल और दो नमक की पोटलियाँ अडक देते हैं। इन चीजों को देखकर नीमों खुश होता है और उसे ऐसा लगता है कि वे नये लोग बड़े प्यारे हैं। हमें मदद करने के लिए ही आये हैं। वास्तव में ऐसी बात नहीं है। चीनी जासूस सुहाली के इशारे पर ही यहाँ आते हैं और जानबुझकर सुहाली के टोकरी में कंबल और दो नमक की पोटलियाँ रख देते हैं। इन चीजों को देखकर नीमों का छोटा भाई देवल उसे सतर्क करता है कि इन चीजों को देनेवाले शायद हत्यारे भी हो सकते हैं। लेकिन सुहाली की चालबाजी ध्यान में नहीं आती है। प्यार अंधा होता है और इसीकारण नीमों को नई चीजें देनेवाले लोग ही अच्छे लगते हैं। आखिर मातई नीमों से बताती है कि - "जिन चीजों को पाने के लिए पसीना न बहें, उन्हें अपने पास रखने से ज्यादा अच्छा है पहाड़ियों से नीचे कूदकर जान दे देना।"[6] इस प्रकार हम देखते हैं कि चीनियों की युध्दनीति युध्द करने की पूर्व तैयारी बड़ी ही सतर्क है और भारत की साधारण जनता को अपने वश में करके भारत पर हमला करने के लिए एक महत्वपूर्ण तरकीब है।

गुरिल्ला सरदार गोगो का पात्र भारतीय आदिवासी सैनिकों की विशेषता और दूरदर्शिता प्रकट करनेवाला है। गोगो, देवल और नीमों तीनों के वार्तालाप के द्वारा इस प्लन की रचना की जाती है। गोगो देवल और नीमों से कहता है कि शाम के बाद रात होने पर आधी रात के पहले या बाद में पुल पार करने की कोशिश दुश्मन करेगा और इसलिए हमें पुल उड़ाने का काम फोरन करने की आवश्यकता है। तत्पश्चात गोगो यह भी कहता है कि हम तीनों में दो आदमियों को पुल उड़ाने के लिए जाना होगा। एक आदमी पुल के सामनेवाली पहाड़ी पर

जाएगा। पहाड़ी पर चीनियों ने एक छोटी-सी चौकी बनाई है और अपनी मशीनगनें लगा दी हैं। पहाड़ी के ऊँचाई से दुश्मन सियाँग के नदी के पुल पर चौबिसों घंटे निगरानी रखता है। जब रात आती है तो पहाड़ी से एक तरह की तेज रोशनी घूमने लगती है। यह रोशनी बराबर शैतान की आँख की तरह पुल के उपर और आसपास के जमीन पर पड़ती रहती है और इसीकारण पुल उड़ाने की आवश्यकता है। यह पुल तभी उड़ाया जा सकता है कि पहाड़ी की मशीनगनों का मुँह बंद हो जाए और रोशनी फेंकने वाले काँच बरबाद हो जाए अर्थात यह साफ है कि पहले हमें दुश्मनों की मशीनगनों का सफाया करना होगा और उनका सफाया होते ही पुल की धज्जियाँ उड़ा दी जा सकती है।

पुल उड़ाने की जिम्मेदारी गोगो स्वयं स्वीकारता है और वह कहता है कि पिछले हमलें में हमने दुश्मन की छावनी से एक पेटी ले भागे थे। इस पेटी में कुछ बम रखे हुए हैं जो किसी चीज में चिपका दिए जाने के बाद काफी देर से फटते हैं और उस समय दुश्मन का बारूद जो हम ला चुके वह बारूद खुद उसीका ही रास्ता रोक देगा।

तत्पश्चात मशीनगनों को बरबाद करने की एक तरकीब गोगो सोचता है और कहता है देवल और नीमों में से किसी एक को अपने तमाम जिस्म पर बारूद की पट्टियाँ लपेटकर पीछे से पहाड़ी पर चढना होगा। इस शख्स के पास हथगोले भी होने चाहिए। फिर उस चोटीवाले खाई के दायरे में पहुँचकर वह दो-चार गोलों से ही अपना काम पूरा कर सकता है। इस प्लन में गोगो यह भी कहता है कि जिस्म में बारूदी पट्टियाँ बांधने की इसलिए आवश्यकता है कि दुश्मन पर हमला करने से पहले उस व्यक्ति पर अगर दुश्मन की गोली आ जाती है तो बारूदी पट्टियों से बंधा हुआ वह आदमी उड़ जाएगा और उसके साथ ही दुश्मन की मशीनगनें उड़ जाएगी। दुश्मनों की मशीनगनें उड़ा देने का और बारूदी पट्टियाँ अपने जिस्म पर बाँधने का काम देवल स्वीकारता है। और उसके आँखों पर बारूद की पट्टियाँ भी बाँधी जाती है लेकिन नीमों और देवल में एक दूसरे के प्रति प्यार होने के कारण थोडासा संघर्ष होता है और आखिर में गोगो के अनुपस्थिति

में देवल अस्थायी गुरिल्ला सरदार बन जाता है और नीमों को हुक्म देता है कि नीमों ही देवल की जिस्म में पट्टियाँ बाँध दे। पेटी में रखी हुई पट्टियाँ मातई निकालती है। नीमों को देती है और नीमों देवल के जिस्म में बाँध देता है। उसके कमर में हथगोले बँधे जाते हैं और तत्पश्चात मातई चुपचाप एक बंदूक उठाकर दोनों हाथों से देवल को देती है और अचानक देवल पुकारकर उसे लिपट जाती है। माँ को देवल की मौत की आशंका निर्माण होनेसे वह दुःखी होती है, लेकिन देवल माँ को धीरज देने का काम भी उस समय करता है और देवल पुल उड़ाने के काम पर जाता है।

आजकल यह दिखाई देता है कि बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों पर अपनी हुकुमत चलाने के लिए उनकी कमजोरियों का लाभ उठाना चाहते हैं जिनमें अमरीका, चीन और रूस महत्वपूर्ण बड़ी शक्तियाँ हैं। पाकिस्तान वास्तव में एक छोटा राष्ट्र है और यद्यपि वह युध्द सामग्री बनाने की कोशिश करता है फिर भी भारत जैसे द्वीप खंड राष्ट्र पर हमला करने के लिए उसे युध्द सामग्री की और अन्य चीजों की और रूपयों की भी जरूरतपड़ती है। इस हालत में पाकिस्तान बड़े राष्ट्रों से युध्द सामग्री प्राप्त करता है। "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में यह दर्शाया गया है कि पाकिस्तान हाजीपीर का दर्रा हासिल करने के लिए अमरीका से कुछ सामग्री प्राप्त करता है और वह अमरीका से अमरीकी पेंटन टॅंकों की ताकदवर तोपें खरीदता है और सैबर जेट हवाई जहाज भी लेता है। अमरीकी पेंटन तोपें और सैबर जेट हवाई जहाज ये ऐसे हथियार हैं जो इस्तेमाल करने पर किसी भी राष्ट्र को खतरे में डाल सकते हैं। इस संदर्भ में प्रस्तुत नाटक के पात्र जालिम खाँ के शब्दों में देख सकते हैं कि पाकिस्तान अमरीका से कैसे शस्त्रास्त्र मदद लेता है और भारत पर आक्रमण करने के लिए तैयार होता है जामिल खाँ के शब्दों में - "दोजख की आग, जो हमारे बख्तरबंद डिवीजन के अमेरिकी पेटन टॅंकों की ताकदवर तोपों के मुँह से उगली जायगी और जो अमेरिका के सैबर जेट हवाई जहाजों से गिराए जानेवाले नेपाम बमों से फूटेगी।"[7]

जिस प्रकार युध्दजन्य स्थिति में बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों को अपने काबू में रखने के लिए उन्हें शस्त्रास्त्र की सप्लाइ करते हैं। उस प्रकार उसके विपरीत कभी-कभी यह भी दिखाई देता है कि कुछ लोग एक दूसरे की मदद करते हैं, यद्यपि वे भिन्न राष्ट्रीय या भिन्न धर्मीय भी हो सकते हैं। "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में इस बात का उल्लेख किया गया है कि जब पाकिस्तानियों ने कश्मीर पर हमला किया तब वहाँ की मुसलमान जनता ने भारत के हिंदू सैनिकों की मदद की। कश्मीरी मुसलमानों ने भारतीयों को रसद की सप्लाइ की और उनकी सहायता करनेवाले भारतीय सैनिकों के प्रति अपनी आस्था प्रकट की। इतना ही नहीं इस युध्द में कश्मीर के मुसलमानों ने हिंदू सैनिकों को गोला बारूद पहुँचाने का कार्य किया और उस समय पाकिस्तान फौजियों ने और छिपे हुए मुजाहिद मशीनगनों का इस्तेमाल करके उन पर हमला किया मगर कश्मीरी मुसलमान में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ। इस घटना के संदर्भ में हम यह देख पाते हैं कि भारत-पाकिस्तान दोनों के लिए कश्मीर समस्या खड़ी है। पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला करने पर वहाँ के मुसलमान सैनिक भारत की सैनिकों की ही मदद करते हैं जो उनकी दरिया दिली तथा भारत के प्रति आस्था का ही परिणाम है।

"जय बांगला" नाटक में भी पाकिस्तान अमरीका और चीन से युध्द सामग्री प्राप्त करता है इसका उल्लेख किया गया है। जब कोमिल्ला के उल्लेख सिपाहियों को युध्द सामग्री की जरूरत होती हैं तब पाकिस्तान वह सामग्री पद्मा नदी से रवाना करता है। इस सामग्री में मुख्यतः मोटार बोट, 300 बंदूके, 3000 कारतूस, 600 हथगोले और कुछ सैनिक भी भेजें जाते हैं। इनमें से 300 बंदूके अमरीका से प्राप्त की गई हैं और अन्य सामग्री चीन से प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाकिस्तान भारत पर या बांगला देश पर हमला करने के लिए विदेशी शस्त्रास्त्रों का उपयोग करता है।

डॉ॰रामकुमार वर्मा ने "जय बांगला" नाटक में भी सैनिक भरती के बारे में कुछ बातें कही हैं। बांगला देश के निर्माता शेख मुजीबुर्रहमान हैं। वे चटगांव के भूमिगत केंद्र से मुक्ति फौज का संचालन करते हैं और जब पाकिस्तान बांगला

देश पर हमला करता है तब ढ़ाका युनिवर्सिटी का एक छात्र धीरेंद्रनाथ भी उस मुक्ति फोज में सम्मिलित होना चाहता है। जो एन·सी·सी· का सार्जेण्ट भी है और खुद बंदूक चलाने की शिक्षा अपने साथियों को भी देता था। पाकिस्तानियों के द्वारा स्त्रियों के होनेवाले अपहरण का भी वह बदला लेना चाहता है और बांगला देश की स्वतंत्रता के लिए पाकिस्तान के खिलाफ युध्द करके मरना और मिटना भी चाहता है। पाकिस्तानियों के खिलाफ लड़ने के लिए और उन्हें नष्ट करने के लिए बांगला देश के सैनिक में वह भरती होता है। मुक्ति फोज के एक कार्यकर्ता शिशिर दा से धीरेंद्रनाथ कहता है - "तो मुझे भी मुक्ति फोज में भरती कर लीजिए। हम बाड़ला देश की स्वतंत्रता के लिए युध्द करेंगे। अगर मरना है तो देश के लिए मरेंगे। जो जो व्यक्ति पाकिस्तानियों की गोलियों से मारे गए हैं, उनके रक्त की धारा में पाकिस्तानियों के रक्त की धारा मिलाकर रहेंगे। और मैं प्रण करता हूं कि सुधारानी के अपहरण का बदला मैं पाकिस्तानियों को मौत के घाट उतार कर लूंगा।"[8]

इसके विपरित सैनिक भरती के संबंध में "युध्दमन" नाटक में यह दर्शाया गया है कि घुसबाज जैसे तंदुरुस्त लोग सैन्य में भरती होने से इन्कार करते हैं और अपनी व्यक्तिगत ताकद को ही सब कुछ मानते हैं।

"युध्दमन" नाटक में दिखाया गया है कि आजकल बड़ी शक्तियाँ छोटे राष्ट्र को शस्त्रास्त्रों की सप्लाई करती रहती हैं और छोटे-छोटे मुल्कों पर युध्द छिड़े रहते हैं। एक युध्दबंदी और एक सैनिक के बीच हुए निम्नलिखित वार्तालाप को देखा जा सकता है -

सैनिक : हमारे लीडर, अखबार, रेडियो कहते हैं कि तुम्हारे मुल्क ने हमारे मुल्क पर हमला किया है।

युध्दबंदी : हमारे लीडर, अखबार, रेडियो भी यही कहते हैं कि तुम्हारे मुल्क ने हमारे मुल्क पर हमला किया है।

सैनिक : अगर हमारा मुल्क बिनावजह तुम्हारे मुल्क पर हमला करता तो दुनिया के इतने मुल्क हमें बढ़िया से बढ़िया हथियार, लड़ाकू जहाज, गोला, बारूद इमदाद में क्यों दे रहे हैं ?

युध्दबंदी : हमारे मुल्क को भी तो दे रहे हैं ?

सैनिक : हमारे मुल्क को नाटो से भी मदद मिल रही है।

युध्दबंदी : हमारे मुल्क को सेन्टो से।

सैनिक : ऐसे तो एक दिन दुनिया का हर मुल्क जंग कर रहा होगा।

युध्दबंदी : और सारी दुनिया जंग का मैदान होगी।[9]

इसमें संदेह नहीं कि आज जब छोटे-बड़े मुल्कों में युध्द दिखाई देता है इसका एक प्रमखु कारण शस्त्रास्त्र सप्लाई करना और विश्व में अशांति फैलाना है।

3· <u>युध्दनीति</u>

युध्दजन्य स्थिति में युध्द के विभिन्न तरीके दिखाई देते हैं जिनका उल्लेख विवेच्य नाटकों में किया गया है। डॉ·शिवप्रसाद सिंह लिखित "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में एक प्रसिध्द समाचार संस्था का संवाद प्रतिनिधि विवेककुमार रॉय एवं सैनिक गुप्तचर विभाग अधिकारी कैप्टन मोहनसिंह के वार्तालाप द्वारा चित्रित किया गया है कि 8 सितम्बर 1962 से निरंतर चीनी सेना का आत्मघाती सैलाब, लहर पर लहर के रूप में भारतीय सीमाओं से टकराता रहा। अधिक से अधिक धरती हासिल करने का प्रयत्न करता रहा। उस समय भारत ने चीन की तरफ मैत्री का हाथ बढ़ाया मगर एक मित्र ने दूसरे मित्र के पीठ में सच्चाई और कमजोरी को ठोकर मारकर पंचशील की कसम खाने के बाद भी छूरा भोंक दिया। मतलब भारत की बात न मानते हुए उसके साथ हमेशा विश्वासघात करता आया है। यह बात सिर्फ आज ही नहीं बीती सदियों के इतिहास में भी ऐसी बात कहाँ नहीं हुई ? चीन के इस हरकत को देखकर पं·नेहरू ने किया वक्तव्य विवेक के शब्दों में - "चीन की इस हरकत से तो एक भारी क्राइसिस ऑब कॉन्फिडेन्स, विश्वास का संकट पैदा हो गया है। हम समझ ही नहीं पाते कि किसी जिम्मेदार राष्ट्र के नेताओं से बात कर रहे हैं या हर कायदे-कानून को ठोकर मार देनेवाले डाकू-लुटेरों से।"[10] यहाँ के उपर्युक्त दोनों मित्र यह भी सूचित करते हैं कि भारत में लोगों के मन में एकदम उत्साह बढ जाता है और एकदम विनष्ट भी हो जाता

है। भारत की यह कमजोरी वास्तव में साधारण जनता की नहीं बल्कि विवेक और कैप्टन जैसे पढ़े लिखे लोगों की भी है इस बात को वे स्वयं दोनों स्वीकार करते हैं। हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा लगाना असान है लेकिन उसका प्रत्यक्ष पालन करना कठिन है यद्यपि भारत-चीन के प्रति बंधुत्व का व्यवहार करना चाहता है किन्तु चीन भारत को दुश्मन की निगाहों से देखता है और यहीं खाई दोनों राष्ट्रों में 1962 में दिखाई देती है। चीन के भारत के प्रति विश्वासघात को अगर ठीक से जवाब देता है तो प्रत्यक्ष युध्द करनेवाले सैनिक साधारण जनता तथा बुध्दिजीवी वर्ग को संमिलित रूप में प्रयास करने की आवश्यकता है इस पर नाटककार ने जोर दिया है। चीन का भारत पर हमला करने का तरीका निःसंदेह विश्वासघाती है।

चीनियों की युध्दनीति बड़ी ही खतरनाक है, चीन को यह मालूम है कि भारतवासी अध्यात्म का पालन करनेवाले हैं। ईश्वर के प्रति उनके मन में आस्था है। हिंदुस्थान के ज्यादातर लोक आस्तिकवादी हैं मंदिरों या गिरजाघरों में पूजा अर्चा करनेवाले या नमाज पढ़नेवाले हैं। इसीकारण चीन सीमांचल प्रदेश में होनेवाले भारतीय मंदिरों पर "शेल" की वर्षा करते हैं मंदिर के साथ साथ वहाँ के लोगों को भी उद्ध्वस्त या घायल करते हैं। "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में यह दर्शाया गया है कि तेजपुर के मिशन स्कूल की एंग्लो इंडियन टीचर रोज़ ओब्राएन्स अपने बूढ़े पिता को - डेनिएल ओब्राएन को देखने के लिए बोमदि-ला आती है तब उसे दिखाई पड़ता है कि चीनी सैनिकों के पुजाघरों पर हुई "शैल" वर्षा से गिरजाघर टूट पड़ा है। उस समय रोज़ के पिता डेनियल भी घायल हुए हैं।

"घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में यह भी दर्शाया गया है कि चीनी सैनिक भारतीय बौध्द मोनपा धर्मगुरू का वेश परिधान करके धोखें से भारतीय सैनिकों पर हमला करते हैं और साथ ही बोमदि ला में रहनेवाले भोले जंगली निवासियों पर हमला करके उन्हें खत्म करते हैं। इसमें संदेह नहीं कि निरपराध साधारण जनता पर चीनियों का जो हमला होता है वह उनकी पशुता का ही द्योतक है। मानवता के ऊँचे विचार केवल शब्दजाल में रखकर प्रत्यक्ष कृति में हिंसाचार करना और भारत

की सीमावर्ती प्रदेशों को अपने राष्ट्र में सम्मिलित करने का चीन का युध्द का तरीका निःसंदेह विश्वासघात तथा अमानवीय है।

"नेफा की एक शाम" नाटक में भी यह दर्शाया गया है कि चीनी सैनिक सियाँग नदी के तटवर्ती प्रदेश में हमला करते हैं। उस समय वे लामाओं की पोषाख पहने हुए भारतीय सेना पर हमला करते हैं। उस समय वे चीनी सैनिकों से पकड़े भी जाते हैं और उन पर अत्याचार भी किये जाते हैं। उन्हें पकड़कर सारी रात नंगी बर्फ पर घसीटते हुए जाते हैं और एक काँटेदार बाड़ी में बंद कर देते हैं। ये पकड़े हुए भारतीय फौजी वहाँ बीमारी और भूख से तड़पते रहते हैं अगर वे दवा की माँग करते हैं तो उसे चीनियों द्वारा गोली का शिकार बनना पड़ता है।

राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" इस नाटक में सैनिकों की वीरता का वर्णन किया है। पाकिस्तानी फौजियों की कड़ी निगरानी शंख और बेदोरी चौकी के आसपास होने के बाद भी भारतीय सैनिकों ने हमला करके अपना कब्जा किया है। नजदीक आनेवाली गोलियों की आवाज और काफिरों की फौज तबाही का संदेशा लेकर आ रही है यह सुनते ही काफिरों का सामना करने की बात जालिम खाँ के शब्दों में - "खुदा को हाजिर नाजिर जानकर और कुराने पाक की कसम खाकर मैं वादा करता हूँ कि जब तक शरीर में खून की एक भी बूँद रहेगी, मैं काफिरों को हाजीपीर के दर्रे की ओर बढने नहीं दूंगा।"[11] जालिम खाँ के शब्दों में देखी जा सकती है! वास्तव में जालिम खाँ एक ऐसा पाकिस्तानी शख्स है कि जो धर्म के नाम पर भारत के खिलाफ धर्मयुध्द करना चाहता है।

अच्छा कार्य करने पर कोई उसे इनाम देता है। मगर कभी-कभी एखाद आदमी को पकड़ने के लिए भी इनाम का ऐलान किया जाता है इसकी जानकारी राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" इस नाटक में मिलती है। भारतीय लेफ्टिनंट कर्नल रणजीत सिंह दयाल ने शंख चौकी पर कब्जा किया है। इसलिए "जिब्राल्टर फोर्सेज" के हेडक्वार्टर ने कर्नल साहब को जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए पाँच हजार रुपये का इनाम जाहिर किया है।

इस प्रकार का इनाम का ऐलान युध्दनीति का ही एक विशिष्ट तरीका है।

युध्दजन्य स्थिति की एक विशेषता यह भी दिखाई देती है कि इस समय विविध प्रकार की अफवाहे फैला दी जाती है। इस समय सारा वातावरण शंकाकुल हो जाता है। एक सैनिक दूसरे सैनिक के प्रति शंका की निगाह से देखता है। इतना ही नहीं कोई जासूस से या सैनिक से जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करता भी दिखाई पड़ता है। "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में अकबर नामक एक पात्र भारतीय जासूस के रूप में पाकिस्तानी सैनिकों में उनकी छावनियों में प्रवेश कर उनसे युध्दजन्य स्थिति की और अन्य जानकारी प्राप्त करता रहता है। प्रस्तुत नाटक में जालिम खाँ पाकिस्तानी मुजाहिद है और धर्म के नाम पर युध्द छिड़ देने का और अफ़वाहे फैला देने का कार्य करता है। "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में जालिम खाँ इस प्रकार की अफ़वाहे फैला देता है कि हिंदुस्तान पाकिस्तान युध्द में हिंदुस्तानी सेना ही पाकिस्तानी लोगों पर अत्याचार कर रही हैं। जालिम खाँ अकबर से कहता है - "हिंदुस्तान में मुसलमानों का क़त्ले-आम जारी है। मसजिदे नेस्तनाबूद की जा रही है, मुस्लिम औरतों की इज्जत पर डाका डाला जा रहा है और तुम पीर के नाम पर हिंदुओं की तारीफ कर रहे हो। बेवकूफों, इससे बेहतर तो यह है कि तुम जहर खाकर सो जाओ।"[12]

युध्दजन्य स्थिति में दुश्मनों की ओर से अफवाहें फैलाना युध्दनीति का ही एक विशिष्ट अंग है।

नाटककार बृजमोहन शाह ने आज की युध्दनीति पर इस दृष्टि से भी प्रकाश डाला है कि युध्द में कुछ ऐसे गुप्तचर होते हैं कि जो शत्रु पक्ष के डेरे में घुस जाते हैं और वहाँ की खबरें अपने अधिकारियों को देते हैं। प्रस्तुत नाटक में ऐसे ही एक गुप्तचर को युध्दबंदी के रूप में पकड़ा जाता है और उसे मारपीट की जाती है। कोई सैनिक उसे लाथ मारकर धकेलता रहता है, कोई उसे गिरा देता है। युध्दबंदी के आँखों पर पट्टी बाँधी जाती है, बाद में अधिकारियों के सामने वह खोली भी जाती है। लेकिन वह गुप्तचर होने का पता उन सैनिकों

को नहीं बताता है तब उसके साथ डाँट-डपट की जाती है। जोर-जोर से मार पीटा जाता है। तो भी वह युध्दबंदी चीखने रोने के सिवाय और कुछ नहीं करता है। कैप्टन ही उस युध्दबंदी को मारपीट करता है। इतना ही नहीं यह भी दिखाया गया है कि युध्दबंदी की कलाई पर सोने की घड़ी होती है वह भी उससे छीनी जाती है। युध्दबंदी को रायफल के आगे भी खड़ा किया जाता है, फिर भी अपने मन की गुप्त बातें दुश्मनों को नहीं बताता है। युध्दबंदी के पेट पर लाथ मारी जाती है, लेकिन युध्दबंदी कुछ भी नहीं बोलता है। सैनिक राइफल से उस युध्दबंदी को मारना चाहता है। लेकिन मेजर उसे मारने नहीं देता है। जब सैनिक बता देते हैं कि इसे किसी विशिष्ट जगह रखना भी मुश्किल है। अतः उसे मार डालना ही उचित है। लेकिन मेजर जिनीवा कन्वेन्शन का हवाला देकर उसे न मारने की सलाह देता है। लेकिन उस समय कैप्टन कहता है कि अगर यह युध्दबंदी भाग जाएगा तो हमारे मोर्चे के सारे सिक्रेट दुश्मन को पहुँच जाएँगी फिर भी मेजर उसे मारने नहीं देता है। आखिर में युध्दबंदी यह भी बताता है कि मैं सिर्फ अपने देश के सैनिक अधिकारियों को यहाँ के सिक्रेट बताने के लिए ही यहाँ घुस आया हूँ। अगर मुझे इस समय मरना होगा तो भी अपने देश के जंग के बारे में कोई सिक्रेट नहीं बताऊंगा।

इस प्रकार नाटककार ने यह भी दिखाया है कि कुछ गुप्तचर ऐसे होते हैं कि जो अपने देश के प्रति इमानदार रहते हैं और किसी भी हालत में अपने देश की सिक्रेटस् दुश्मनों को नहीं बता देते हैं।

बलूचिस्तान की युध्दनीति

डॉ॰रामकुमार वर्मा लिखित "जय बांगला" नाटक में सैनिक के आदर्शवादिता को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। पाकिस्तान के सभी सैनिक ढाका शहर में सोना, जवाहरात बीवियाँ आदि हासिल करने के लिए जा रहे हैं। मगर फ़िरोज खाँ इस बात से सहमत नहीं है। इसलिए चौकी पर पहरा देते बैठा है। जहाँ छः बरस की निरपराध लड़की को कैद करके रखा है। यह जंग इन्सान की जंग नहीं ऐवान का जंग है ऐसे कहते हुए घृणा व्यक्त की। मस्जिदों पर गोली चलाना, कुराण जलाना,

निरपराध लोगों को मारना यह सभी दृश्य देखकर वापस जाना चाहता है। बलुचिस्तान के रणनीति के बारे में बलुची सैनिक फिरोज खाँ का वक्तव्य - "बलुचिस्तान का अर एक सिपाई लड़ाई लड़ेगा लेकिन ईमान से लड़ेगा। जो उसके सामने आत ऊठा के बैट जाता ए, उस पर गोली नहीं चलाएगा।"[13] छः बरस की निरपराध बच्ची के प्रति दया की भावना उदित होने के कारण उसे छोड़ देता है। इन सभी बातों में फिरोज खाँ का आदर्शवाद दिखाई देता है।

4· युध्द में लूटमार

युध्दजन्य स्थिति की एक विशेषता यह भी दिखाई देती है कि युध्दकाल में दोनों ही पक्ष के सैनिक एक दूसरे पर हमला करते रहते हैं और साथ ही साथ लूटमार अत्याचार करते दिखाई देते हैं। "हाजीपीर का दर्रा" नाटक मुख्यतः कश्मीर समस्या को लेकर लिखा गया है। कश्मीर की एक विशेषता यह भी है कि कश्मीर की जनता ज्यादातर मुलसमान है लेकिन 1949 में हुई विधान सभा में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि वहाँ की जनता और वहाँ का भू प्रदेश अर्थात जम्मू और कश्मीर भारत का ही अंग बनकर रहेगा। लेकिन पाकिस्तान को यह बात मान्य नहीं है और इसीकारण पाकिस्तान ने 1965 में कश्मीर समस्या को परिलक्षित करते हुए कश्मीर पर हमला किया है। इस संदर्भ में लिखे हुए 'हाजीपीर का दर्रा' इस नाटक में यह दर्शाया गया है कि मजहब के नाम पर पाकिस्तानी मुसलमान सैनिक कश्मीरी मुसलमानों पर हमला करते हैं। प्रस्तुत नाटक का एक पात्र जालिम खाँ एक मुजाहिद है लेकिन वह शराबी भी है। शराब के नशे में यह मुसलमान मुजाहिद यह भूल जाता है कि हाजीपीर का दर्रा एक पवित्र मसजिद है। वह शराब के नशे में हाजीपिर की मजार को बूटों से ठोकरे लगाता है और उस पर थूँकता भी है। इतना ही नहीं जालिम खाँ और दूसरा एक मुजाहिद सिराजुद्दीन दोनों ही हाजीपिर की मजार को नष्ट करना या उसकी सूरत को बिगाड़ देना चाहते हैं। आखिर नाटककार ने यह दर्शाया है कि जालिम खाँ अपने हाथ में कुदाल लेकर मजार की ओर बढ़ जाता है और दीवार पर कुदाल से दनादन चोंट करने लगता है। पत्थरों के गिरने की कर्कश आवाज पैदा होती है और मजार का कुछ हिस्सा नष्ट होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि धर्म के नाम पर "जिहाद" पुकारने

वाले पाकिस्तानी मुसलमान सैनिक हाजीपीर की मजार को तोड़-फोड़ कर इस्लाम धर्म का ही अपमान करते दिखाई देते हैं। धर्म का भूत सवार होने पर एक ही धर्म के लोग कैसे लड़ते और झगडते हैं और अपने पवित्र धर्म क्षेत्र को कैसे बरबाद करते हैं इसका चित्रण नाटक्कार ने इस नाटक में किया है।

"हाजीपीर का दर्रा" नाटक में यह भी दिखाया गया है कि पाकिस्तानी मुलसमान कश्मीरी मुसलमानों पर हमला करते हैं और उनकी ही लूटमार और अत्याचार करते हैं। पाकिस्तान का एक जासूस बूढ़ा मौलवी के शब्दों में इस लूटमार को देखा जा सकता है। बूढा मौलवी जालिम खाँ से कहता है - "अपनी इन आँखों से पूछो जिनमें सिर्फ नफ़रत के शोले दहक रहे हैं। अपने ईमान से पूछो जो कौडियों के मोल बिक गया है।अपने इन हाथों से पूछो जिन्होंने इन्सानियत का खून बहाकर, बकौल हुकूमते पाकिस्तान, शबाब हासिल कराया होगा। अल्लाह के बंदे हो न, और अल्लाह का ही घर उजाड़ रहे हो ?"[14] इस प्रकार हम देखते हैं कि एक राष्ट्र के मुसलमान दूसरे राष्ट्र के मुसलमानों पर अत्याचार कर रहे हैं।

"युध्दमन" नाटक में यह दिखाया गया है कि सामान्य जनता युध्दजन्य स्थिति में घायल होती है और इलाज के लिए जब अस्पताल का रास्ता सुधारती है, तब पुलिसवाले ऐसे लोगों की मारपीट करते हैं। लेकिन इस मारपीट के बावजूद यह भी दर्शाया गया है कि जहाँ पुलिस सामान्य जनता पर अत्याचार करती है वहाँ कर्नल जैसा अधिकारी सामान्य जनता की फिक्र करता है और उसे इलाज के लिए अस्पताल भेजता है।

डॉ·रामकुमार वर्मा लिखित "जय बांगला" नाटक में बाड़ला देश पर किए अत्याचार का वर्णन किया गया है। पाकिस्तानी फोजों में से एक सिपाही ने मुहल्ले में जवान बीवियों और लडकियों को अफसरों के हवाले करने का फरमान जारी किया। लेकिन बांगला देश के लोगों ने नहीं माना। इसलिए दो सौ आदमियों को मशीनगन से उड़ा दिया गया।

इस संदर्भ में पाकिस्तान का एक सिपाही बांगला देश के जनता पर किस तरह पाकिस्तानी सैनिक अत्याचार करते हैं। विशेषतः स्त्रियों पर अत्याचार कैसे करते हैं ? इसका वर्णन एक पाकिस्तानी सिपाही के शब्दों में ही देखा जा

सकता है - "आह ह् ह। आज तो सैंकड़ो बंगालियों को जहन्नुम रसीद किया। जहन्नुम रसीद। सुनते हो, रशीद मियाँ ? मैंने एक मुहल्ले में यह फरमान जारी किया कि जितने यहाँ रहने वाले हैं वो सब एक घंटे के भीतर अपनी जवान बीवियों और लड़कियों को फौजी अफसरों के हवाले कर दे और यहाँ से भाग जावें नहीं तो गोली से उड़ा दिए जाएंगे। जब इस काम में देर होने लगी तब हमने मशीनगन लगाकर करीब दो सौ आदमियों को वहीं ढेर कर दिया।वो उठ भी नहीं सके और हम पचास जवान उनके घरों में घुस गए। बिजली की तरह···तूफान की तरह··· बीवियाँ लडकियाँ डर कर ऐसे सहम गई जैसे बिल्ली के सामने मैना। (ठठाकर हँसते हुए) बिल्ली के सामने मैना···मैना···मै···ना।"[15]

"जय बांड़ला" नाटक में पाकिस्तान के अत्याचारों के और भी कुछ उदाहरण दिखाई देते हैं। पाकिस्तान सिपाहियों में से रशीद सुलेमान डॉक्टर के बंगाली अस्पताल में घुसकर अस्पताल में होनेवाले नर्सों पर अत्याचार करता है। रशीद और अन्य पाकिस्तानी सैनिक रूपाली सिनेमा थिएटर को आग लगाते हैं। जिसकी वजह से थिएटर से बाहर दौड़ते हुए लोगों को पाकिस्तानियों के गोली का शिकार बना दिया जाता है और एक लड़के को पकडकर सिनेमा थिएटर के सामने होनेवाली इमारत के पोल पर काला झंडा लगाने के लिए कहा और अंत में उसे इनाम मिलता है - गोली। कर्फ्यू जारी होते ही एक लड़का नारियल के पेड़ पर चढ़ जाता है। मगर पाकिस्तान सैनिकों ने गोली मारकर उसका ही नारियल बना दिया।

बैंक ऑफ ऑस्ट्रेलिया के सौ सोने के बिस्कुट, इस्लामी ज्वेलर्स के चार मोती की मालाएँ, दो हिरे की अंगूठियाँ, मुस्लिम ज्वेलर्स की पंद्रह घडियाँ, हबीब बैंक के दस लाख करेंसी नोट और युनाइटेड़ बैंक के आठ हजार रूपये की लूटपाट पाकिस्तानियों ने की। ढ़ाका विश्वविद्यालय में होनेवाले प्रोफेसर, छात्र, नोकर आदि सभी को गोलियों का शिकार बना दिया और छात्रावास की लडकियों का अपहरण करने के पीछे उनका महत्वपूर्ण उद्देश्य था कि उनसे ऐसी संतान पैदा हो कि खूँख्वार बनकर पाकिस्तान के पंजाबी मुसलमानों की तरह इन्सानियत में आग लगा दे। "जय बांगला" नाटक में पाकिस्तानियों के द्वारा बांगला देश के लोगों की कि गई लूटमार पर भी प्रकाश डाला गया है।

ढाका-पतन से पूर्व पाकिस्तानी सैनिकों ने असंख्य बुद्धिजीवियों—डाक्टरों, प्राध्यापकों व पत्रकारों की निर्मम हत्याएं कीं।

5· **युध्द में बहादुरी**

भारत देश में कश्मीर में होनेवाला "हाजीपीर का दर्रा" मुसलमान लोगों का बहुत बड़ा तीर्थक्षेत्र है, जिसकी जानकारी राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में चित्रित है। पाकिस्तान के मुजाहिद रोजा छुडाने के लिए दर्रे की तरफ जाते हैं, मगर नमाज का समय होने के कारण उन्हें रुकना पड़ता है। आते समय वहाँ हथियार भूल आते हैं। बिना हथियार हमला कैसे करेंगे ? यह सोचते हुए हथियार वापस लाना चाहते हैं तभी हिंदुस्तान सैनिकों की निशानेबाजी सिराजुद्दीन के शब्दों में देखी जा सकती है - "हिंदुस्तानी सिपाही की आँखों की रोशनी बहुत तेज होती है नूर खाँ। निशानेबाज ऐसे हैं कि उड़ता हुआ परिन्दा भी बचकर नहीं निकल सकता।"[16]

"हाजीपीर का दर्रा" नाटक में लेफ्टिनंट कर्नल रणजित सिंह की प्रशंसा पाकिस्तानी मुजाहिद करते हैं। पाकिस्तानी प्रमुख सैनिक जालिम खाँ अपने अन्य सैनिक मोहम्मद को बता देता है कि रणजीत सिंह एक ऐसा भारतीय लेफ्टिनंट कर्नल है जो जान पर खेलकर अपने फौजियों को निकाल ले गया। यहाँ भारतीय सेना कि यह भी विशेषता बताई गई है कि यद्यपि युध्द आमने सामने किया जाता है फिर भी प्रसंगवश ताकद अजमाकर अलग ढंग से भी लड़ाई की जाती है। "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में यह दिखाया गया है कि कर्नल रणजीत सिंह शूर भारतीय सैनिक अधिकारी है। वह अपवादभूत अपने भारतीय सैनिकों को पीछे बुलाकर कुछ समय बाद पाकिस्तानियों पर हमला करता है। जिस भारतीय कंपनी को जितने का प्रयास पाकिस्तानी मजाहिदों ने किया उस कंपनी का कब्जा लेने का साहस भी कर्नल रणजीत सिंह करता है। शंख की चौकी पर हमला बोलकर कर्नल रणजीत सिंह उस पर भी कब्जा करता है। इतना ही नहीं पाकिस्तानी मुजाहिदों को खदेड़ना भी शुरू करता है। कर्नल रणजीत सिंह लेडवाली गली पर भी कब्जा कर देता है। कर्नल रणजीत सिंह को जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए जिब्राल्टर फोर्सेज के द्वारा पचास हजार रुपये का इनाम देने का ऐलान भी किया जाता है। इस ऐलान के बावजूद कर्नल रणजीत सिंह को कोई भी पाकिस्तानी सैनिक न पकड़ सकता है न मार सकता है। इस प्रकार लेफ्टिनंट कर्नल रणजीत सिंह की बहादुरी दर्शायी गई है।

लेफ्टिनेंट कर्नल रणजीत सिंह के भाँति और एक भारतीय लेफ्टिनेंट कर्नल संपूरनसिंह स्वयं कश्मीरी युध्द में कूदता है उसके साथ भारतीय फौज भी होती है और जब बेदौरी की चौकी पर पाकिस्तान कब्जा करने में कामयाब होता है तब ले·कर्नल संपूरनसिंह पाकिस्तानी मुजाहिदों को खत्म कर देता है। जासूस अकबर के शब्दों में - "हिन्दुस्तानी फौज का अफसर ऐसे ही नाजुक मौके पर खुद आगे बढ़कर ललकारता है, जालिम खाँ। दोनों कंपनियों की कमान सम्भालनेवाले ले·कर्नल सम्पूरन सिंह ने खुद सबसे आगे बढ़कर सिपाहियों को भी आगे बढ़ने का हुक्म दिया। कदम-कदम पर मौत को खड़ा करनेवाली हमारी गोलियों की बाढ़ भी इस बार उनके पैर डगमगा नहीं सकी। बेदौरी की चौकी पर कब्जा करने में दुश्मन कामयाब हो गया। उसको देखकर भागनेवाली मौत ने पाकिस्तानी फौजी को बिलकुल आसानी से अपनी गोद में ले लिया।"[17]

डॉ·रामकुमार वर्मा लिखित "जय बाड़ला" नाटक में सैनिकों की ही बहादुरी नहीं बल्कि कई भारतीय लड़कियों की बहादुरी का भी वर्णन किया गया है। समाज मे प्रायः नारियों को लोग अबला समझते हैं, लेकिन वह अबला नहीं। स्व-रक्षा के लिए कभी-कभी दुर्गा भी बन जाती है। पाकिस्तान के सिपाहियों ने ढ़ाका युनिवर्सिटी के छात्रावास की लड़कियों का अपहरण करके आपस में बाँट लिया। जिनमें से मुश्ताक अहमद के पास होनेवाली खूबसूरत लड़की सुधारानी ने छुरी निकालकर उसके कलेजे में भोंक दिया। यह बहादुर लड़की ढाका छात्रावास की लड़की सुधारानी है।

पाकिस्तान का कप्तान शमशेर जंग ने अपने आदमियों को अमेरिका से आए हथियार कोमिल्ला गाँव के पाकिस्तानी सिपाहियों को भेजने का हुक्म दिया था। तभी पद्मा नदी से मोटर बोट कुछ सामान लेकर आ रही है यह जानकारी भारतीय मुसलमान सैनिक युसूफ ने मुक्ति फौज के सैनिक शिशिर दा को बताई। उस समय मुक्ति फौज के सिपाहियों ने छुपकर हमला करके बोट लूट लिया। घालय बलुचिस्तान का सिपाही मुक्ति फौज में भरती होता है। जिनमें एक लड़की थी, सुधारानी जो धीरेंद्रनाथ की होनेवाली बीवी है।

बोट से सफर करनेवाला बलुचिस्तान सिपाही फिरोज खाँ को भारतीय सैनिकों की गोली लगने के कारण घायल होता है। मगर पहले बलुचिस्तान सिपाही फिरोज खाँ ने शिशिर दा को मदद की थी। उसके बदले में अब भारतीय सैनिक शिशिर दा ने घायल फिरोज खाँ को मरहम पट्टी करते ही उसने कहा कि हमारी जान तुमने बचाई है तुम कितने अच्छे हो ऐसा कहते हुए मुक्ति फोज में भरती हो जाता है।

इस प्रकार "जय बांगला" नाटक में एक साथ भारतीय स्त्री-पुरुष की बहादुरी पर प्रकाश डाला गया है। इतना ही नहीं भारतीय सैनिकों की बहादुरी के बारे में ब्रिटीश सेनाधिकारी कैनेथ हंट का कथन दृष्टव्य है - "भारतीय सेना ने 13 दिनों मे बांगला देश के 50 हजार वर्ग मील क्षेत्र में एक लाख से अधिक पाकिस्तानी सेना को परास्त करके विश्व के सैनिक इतिहास में शौर्य और रण-कोशल की नई मिसाल कायम की है। इस समय भारतीय सेना की तुलना विश्व की सबसे ऊँची कोटि की सेनाओं से की जा सकती है।"[18]

भारतीय जवान आगे बढ़ते हैं

भारत का अत्यन्त शक्तिशाली टैंक, जिसने शत्रुओं को बुरी तरह पछाड़ दिया

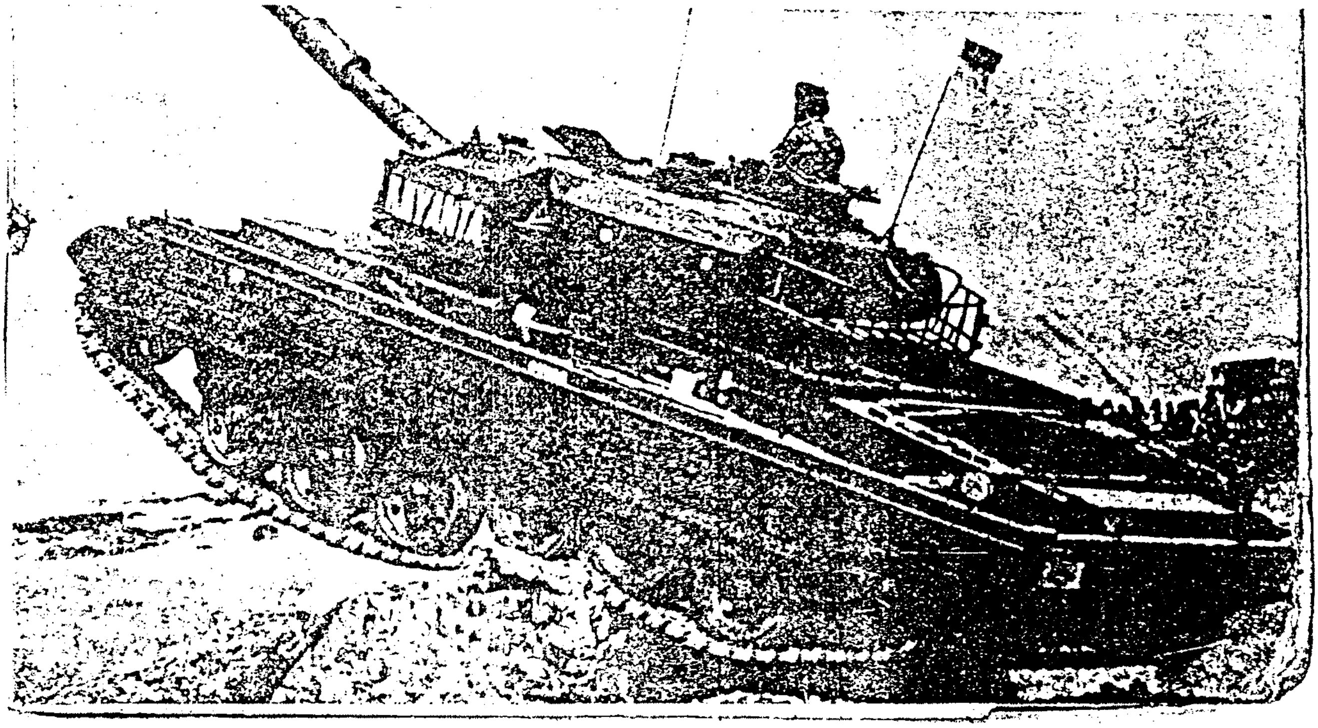

6· **युध्द में हार-जीत**

"युध्दमन" नाटक के अंत में ग्यारहवें दृश्य में नाटककार ने युध्दबंदी और सैनिक के बीच होनेवाले वार्तालाप से यह दर्शाया है कि किसी न किसी कारणवश युध्द जारी रहते ही हैं और उनमें किसी न किसी राष्ट्र की जीत-हार भी होती ही रहती है। प्रस्तुत नाटक में यह दर्शाया गया है कि एक एम·ए·पास युवक जो पहले ड्रामाटिस्ट था वह एक दिन आर्मी में ज्वॉइन होता है और उस समय उसे मालूम हो जाता है कि युध्द क्या है ? वह युध्दबंदी आखिर में हताश होता है, तब सैनिक और युध्दबंदी के बीच जो वार्तालाप होता है उससे यह स्पष्ट होता है कि आखिर में हार और जीत इन्साफ के हाथ में नहीं। वह उपरवाले के हाथ होती है और उसे इस बात का मतलब नहीं होता है। उसे मालूम नहीं होता कि कौन मर रहा है ? कौन जीत रहा है ? निम्नलिखित वार्तालाप देखिए -

सैनिक : तुम्हारी बातों से लगता है कि आदमी जंग के लिए ही पैदा हुआ है। हारे या जीते, ये बात दीगर है।

युध्दबंदी : क्योंकि हार-जीत ऊपर वाले के हाथ होती है और ऊपरवाले को इससे मतलब नहीं कि कौन मर रहा है, कौन जी रहा है।"[19]

7· **युध्द में जासूसी**

गुप्त रूप से किसी बात या अपराध आदि का पता लगाने वाले व्यक्ति को जासूस, भेदिया या गुप्तचर कहा जाता है और इस प्रकार के काम को जासूसी कहा जाता है। किसी संकट काल में न्यायीक जाँच पड़ताल के लिए तथा युध्दजन्य परिस्थिति में जासूसी का विशेष महत्व रहता है। विवेच्य नाटकों में कैप्टन मोहन सिंह (घाटियां गूँजती हैं) , सुहाली (नेफा की एक शाम) अकबर, मौलवी, अताउल्लाह (हाजीपीर का दर्रा) के जासूसों के कामों पर प्रकाश डाला गया है।

1· **कैप्टन मोहन सिंह** : "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक का एक पात्र कैप्टन मोहनसिंह भारतीय जासूस है। वह सैनिक गुप्तचर विभाग का अधिकारी है। प्रस्तुत नाटक में एक प्रसंग में यह दर्शाया गया है कि तेजपुर के एक मिशन

स्कूल की एंग्लो इंडियन टिचर रोज़ ओब्राएन है। रोज़ के पिता का नाम डैनियल ओब्राएन हैं जो बूढ़े हैं। रोज़ को ऐसा लगता है कि वे भारत-चीन युध्द में शायद मारे जाएंगे इस भय के कारण अपने पिता को देखने के लिए रोज़ कैप्टन मोहन से तवाँग जाने के लिए परमीट माँगती है। जहाँ उसके पिताजी रहते हैं। यहाँ नाटक मे यह दिखाया गया है कि कैप्टन मोहन सिंह रोज को उसके अनुरोध पर परमीट देते हैं लेकिन अचरज की बात यह है कि एक भारतीय समाचार पत्र के संस्था के संवाद प्रतिनिधि विवेककुमार रॉय को परमीट दिलाने से इन्कार करता है इसी कारण विवेक और कैप्टन मोहन सिंह के बीच कुछ संघर्ष पैदा होता है कि विवेक को परमीट दिलाने में कैप्टन मोहन सिंह क्यों राजी नहीं होता है? आखिर उन दोनों के बीच की चर्चा के उपरान्त जासूस कैप्टन मोहन सिंह अपनी जासूसी का रहस्य खोल देता है। वह कहता है कि "हमारा काम ही कुछ ऐसा है कि इस में विश्वास को संदेह और संदेह को विश्वास मानकर चलना पडता है।"[20]

इस प्रकार जासूसी का रहस्य इस नाटक में बताया गया है। तत्पश्चात नाटककार शिवप्रसाद सिंह ने "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में और एक प्रसंग में भारतीय जासूसी के काम का उल्लेख किया है। प्रस्तुत नाटक का एक पात्र शीकू है जो कामेड़ ड़िवीजन का आदिवासी वृध्द है। यह वृध्द अपने देश के प्रति प्रेम व्यक्त करनेवाला आदमी है। लेकिन अचरज की बात यह है कि शीकू का इकलौता बेटा टूरौं भारत के प्रति गद्दारी करता है और चीनियों का साथ देता है। भारत के सीमांचल प्रदेश में चाय बगान में नोकर का काम करते हैं लेकिन कुछ समय बाद दोनों बाप-बेटे एक अफसर के कहने पर कलकत्ता जाते हैं वहाँ टूरौं कलकत्ता बँक में चोकीदार का काम करता है और उसका बाप शीकू वापस लोटकर तेजपुर आता है यहाँ नाटककार ने यह दर्शाया है कि टूरौं चीनी सैनिकों से ला से बोमदि ला आने तक का मार्ग चीनी सेनिकों को बताया है। यह टूरौं की गद्दारी है। जब यह बात शीकू को मालूम होती उसका बेटा बोमदिला रणक्षेत्र में वापस आनेवाला है तब शीकू वहाँ पहुँचता है और उसके द्वारा की गई गद्दारी से क्रोधीत होकर अपने बेटे की बोमदि ला के रणक्षेत्र में ही छूरा भोंककर हत्या करता है।

गद्दार मुकुल को पकड़ने के लिए कैप्टन बोमदि ला पहुँचता है। और गद्दार मुकुल को पकड़कर पुछताछ करता है। उसी समय शीकू ने की हत्या की भी तलाशी लेता है। इस तलाशी में उस समय उसे माँ-बाप के बेटे का एक ओर हृदय का नाता समझ में आता है और दूसरी तरफ बेटा भारत के प्रति गद्दारी करने के कारण दोनों में अलगाव की स्थिति क्या है ? इसका पता कैप्टन मोहन सिंह लगाता है। यहाँ बेटा और पुत्र के पारस्परिक प्रेम संबंध और नफरत, गद्दार मुकुल को पकडना आदि नाटककार ने जासूसी प्रकरण के माध्यम से व्यक्त किया है।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री लिखित "नेफा की शाम" में जासूसी का कार्य अनूठा है। आदिवासी दल का सरदार गोगो के प्लान के अनुसार केवल रात को छापेमारी पर जानेवाला है। यह बात शीकाकाई को मालूम थी। जिन्होंने सुहाली को बताई थी। जंगली बेर खाने का बहाना करके सुहाली जंगल में चली जाती है जो बहुत देर तक वापस नहीं आती। रसदगाह पर हमला होनेवाला है यह तुमने ही बताया होगा ऐसे गोगो ने कहा मगर इस बात से वह प्रथमतः सहमत नहीं होती।

दूसरे दिन श्याम को यह साबित हो जाता है कि गोगो के इस प्लान की खबर देनेवाला व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि मातई के झोंपड़ी में रहकर बेटे नीमों से प्यार का नाटक खेलनेवाली सुंदरी सुहाली है। गोगो के आदेशानुसार नीमों गोली चलाने के लिए उद्युक्त होता है। इतने में वह भागती हुई जोर से चिखती है - "ठहरो।"[21] यहाँ पर उसके चरित्र का पूरा रहस्य उद्घाटित हो जाता है। सुहाली न गूँगी है, न नीमों की बीवी है, न सुहाली है, बल्कि वह चीनी जासूस लड़की "सुंगली" है।

राजकुमार लिखित "हाजीपीर का दर्रा" नाटक में अकबर, बूढ़ा मौलवी, अताउल्लाह और बाजासिंह को जासूस के रूप में चित्रित किया गया है। अकबर और बाजासिंह भारतीय जासूस है और बूढ़ा मौलवी पाकिस्तानी जासूस है। प्रस्तुत नाटक में इन तीनों के जासूसी कार्यपर प्रासंगिक रूप में प्रकाश डाला गया है।

अकबर भारतीय मुस्लिम है और मुस्लिम होने के कारण वह जासूसी वेशमें पाकिस्तानी फौज में शामिल होता है। और उनसे कश्मीर युध्द के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करता है। "हाजीपीर का दर्रा" नाटक के बारे में यह दर्शाया गया है कि अकबर पाकिस्तानी सैनिकों से पाकिस्तानी लोगों के भारत संबंधी विचार और पाकिस्तान किस तरह हिंदुस्तानी लोगों पर जुल्म करते हैं इसकी जानकारी प्राप्त करता है। प्रस्तुत नाटक में सर्वप्रथम इस बातका उल्लेख किया गया है कि पाकिस्तान के युवा पीढ़ी को मुजाहिद बनाने की तालीम दी जाती है और यद्यपि ये युवा पिढ़ी युध्द के बारे में कुछ जानते नहीं है। युध्द करना उनके वश की बात नहीं है। फिर भी मुजाहिदों की फेहरिस्त में उनका नाम दर्ज किया जाता है। और "आजाद कश्मीर" की जमीन पर यह सब कुछ घटित होता है। तत्पश्चात अकबर इस बात का भी पता लगता है कि हाजीपीर की मजार पर कौन थूंकता है कौन उस पर कुदाल चलाता है ? यह सब कुछ जानकारी भारतीय जासूस अकबर हासिल करता है इतना ही नहीं अकबर एक मुलसमान सैनिक मोहम्मद से यह भी कहता है कि यहाँ कश्मीर में और वहाँ के गाँवों और शहरों में यह समझ पाना मुश्किल है कि खुफ़िया कौन नहीं है ? एक दूसरे को देखकर ही सबका कलेजा धक-धक किया करता है।

प्रस्तुत नाटक में यह भी दर्शाया है कि खुफिया के वेश में भारतीय मुसलमान अकबर तथा पाकिस्तान के दो प्रमुख सैनिक सिराजुद्दीन और जालिम खाँ जब इकट्ठे हो जाते हैं, तब वे तीनों ही एक साथ कभी अल्लाह ओ अकबर कहते हैं तो कभी यह भी एक साथ बताते हैं कि हम लड़कर हिंदुस्तान लेंगे तो कभी एक साथ कहते हैं कि हिंदुस्तान मुर्दाबाद इस प्रकार अकबर पाकिस्तान सैनिकों मे शामिल होकर यह दर्शाता है कि वह भी एक पाकिस्तानी सैनिक है और हिंदुस्तान के खिलाफ है। हाजीपीर की मजार का कुछ भाग जालिम खाँ की करतूत से टूट जाता है, तब उसकी जानकारी भारत को अकबर ही देता है।

तत्पश्चात नाटककार राजकुमार ने इस बात का भी संकेत किया है कि इस नाटक का एक बूढ़ा मौलवी अताउल्लाह जासूस का काम करता है लेकिन जासूसी

के पहले मलकाबाई की कोठी पर कुछ वाद्य बजाने का काम करता था लेकिन जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया तब वह यकायक मौलवी बन जाता है और गुप्त रूप में पाकिस्तानी युवकों को मुजाहिद बनाता है और मुजाहिदों की एक लंबी सूची बन जाती है। इन मुजाहिदों को चीन के कमांडर फौजी तालिम देते हैं। लेकिन पाकिस्तान के युवा पिढ़ी सैनिक बनने में उतनी सफल नहीं बनती है जितनी हिंदुस्तान की युवा पिढ़ी।

इस नाटक में यह दर्शाया गया है कि भारतीय जासूस अकबर और बूढ़ा मौलवी जासूस दोनों ही एक साथ जासूसी का कार्य करते हैं। दोनों मुसलमान होने पर मौलवी अकबर को पाकिस्तानी आदमी समझकर अन्य सैनिकों के साथ युध्द समाचार के बारे में अकबर के साथ भी चर्चा करता है, कभी वह जालिम खाँ को कह देता है कि आज पाकिस्तानी कप्तान यहाँ नहीं आनेवाला है और साथ ही साथ यह भी संदेश देता है कि पाँच-सात हजार मुजाहिद कश्मीर पर हमला करने के लिए भेजे जाएंगे और सरहद पर पाकिस्तानी फौजे भी तैनात रहेगी। इतना ही नहीं श्रीनगर के रेडियों स्टेशन और हवाई अड्डे पर हमला किया जाएगा और श्रीनगर के रेडियो स्टेशन और हवाई अड्डे पर कब्जा होते ही इन कलाबि हुकूमत की तख्त पोशी का ऐलान कर दिया जाएगा। और जम्मू कश्मीर पर कब्जा मुकम्मल करने के लिए हमारी फौजे छम्ब से घुसकर पठानकोट जम्मू सड़क काट देगी ताकि दुश्मन को हिंदुस्तान से फौजी इमदाद हासिल न हो सके।"[22]

इस प्रकार दिखाई पड़ता है कि अकबर बूढ़े मौलवी जासूस के साथ प्रासंगिक रूप में रहकर उससे ही पाकिस्तानी फौजों के युध्द के तरीके समझ पाता है। जिसकी जानकारी वह हिंदुस्तान को दे सकता है।

जालिम खाँ और पाकिस्तानी बूढ़ा जासूस मौलवी आपस में बातचीत करते हुए रहते हैं तब मौलवी जामिल खाँ को युध्द के समाचार भी बता देता है। जबरदस्त हथियारों से लैस हमारी दो कंपनियाँ इस चौकी की हिफाजत कर रही हैं। इस प्रकार मौलवी जासूस अपने मुजाहिदों की तारीफ करता रहता है और पाकिस्तानी मुस्लिम सैनिक आदि को चौंकाता रहता है कि हिंदुस्तानी सेन्य से पाकिस्तानी सैन्य बढ़कर है और मुजाहिदों की करतूत भी बढ़कर हैं। लेकिन जब जालिम खाँ मौलवी

से कहता है कि रणजीत सिंह ने फिर शंख की चौकी पर हमला बोला और इस बार उस पर कब्जा कर लिया और पाकिस्तानी फौजियों को खदेड़ना भी शुरू किया तब मौलवी की सूरत देखने लायक होती है मतलब यह कि मौलवी जासूस मुजाहिद की संख्या केवल भरती के लिए बढ़ाता रहता है लेकिन चीनी अफसरों से तालिम पाकर युध्द में कुदने वाले यह मुजाहिद कुछ विशेष कार्य नहीं कर सकते हैं। यहाँ नाटककार ने यह भी दर्शाया है कि भारतीय जासूस अकबर पाकिस्तानी सैनिक अधिकारियों में घुसकर यह भी कह देता है कि इस जंग में पाकिस्तान की हालत बहुत बूरी है और हिंदुस्तानी फौजी आक्रमक रहे हैं। यहाँ अकबर यह दर्शाता है कि वह भारतीय जासूस नहीं बल्कि एक पाकिस्तानी सैनिक ही है। अकबर के शब्दों में - "हालत बहुत खराब है जालिम खाँ। हमारी फौजों के पैर उखड़ रहे हैं। मौत को जैसे उसने पालतू कुतिया बना लिया है। मुझको ऐसा लगा जैसे हिंदुस्तानी फौज से मौत भी ड़रती है।"[23]

प्रस्तुत नाटक के अंत में यह भी स्पष्ट किया गया है कि यद्यपि बूढ़ा मौलवी पाकिस्तानी जासूस के रूप में कुछ काम करता दिखाई देता है लेकिन अंत में उसकी असलित प्रकट की जाती है। इस बूढ़े मौलवी को भारत के सैनिक पकड़ लाते हैं और उसकी तलाशी लेते हैं। तब भारतीय सैनिक जासूस बाजासिंह इस रहस्य को खोल देता है कि यह मौलवी भले ही गाना बजाना जानता है लेकिन असल में यह कश्मीरी नहीं है। यह लाहोरी है और मलकाबाई के कोठी पर सफददाई का काम करता है और अंत में मौलवी साहब स्वयं कबूल करते हैं कि वे पाकिस्तानी जासूस है और आखिर में निराश होकर उसके गले की माला का एक दाना दबाकर उसमें रखा हुआ विष खाकर खुदकुशी करता है। "हाजीपीर का दर्रा" इस नाटक में यह दर्शाया गया है पाकिस्तानी जासूस से भारतीय जासूस बढ़कर है चाहे वह अकबर हो या बाजासिंह।

"हाजीपीर का दर्रा" नाटक में भारतीय मुसलमान जासूस अकबर के बारें में हिंदू सैनिकों के मन में संदेह पैदा होता है कि क्या यह अकबर सचमुच भारतीय जासूस है? इस संदेह की वजह से एक भारतीय सैनिक तेजसिंह अकबर पर इस

तरह गोली चलाता है कि अकबर घायल होकर रणक्षेत्र में गिर पड़े, लेकिन न मरे। आखिर इस रणभूमि में तेजसिंह का अकबर के बारें में संदेह दूर होता है और कश्मीरी अकबर मुसलमान होकर भी भारत की तरफ से ही जासूसी काम करनेवाला एक प्रामाणिक मुसलमान है।

8· <u>युध्द में रिपोरटर</u>

आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। इस युग में युध्दजन्य स्थिति में रिपोरटर या संवाद-दाता का विशेष महत्व है। रिपोरटर ही समाचार पत्रों को युध्दजन्य स्थिति के जानकारी पहुँचाता है और समाचार पत्रों की माध्यम से वह जानकारी समाज तक पहुँच जाती है। अतः रिपोरटर का महत्व निःसंदेह है।

कभी – कभी यह भी दिखाई देता है कि कुछ रिपोरटर युध्द स्थल पर न जाकर भी युध्द के बारें में बड़ी-बड़ी हेडलाइन्स लिखकर लोगों को चौंका देते हैं इसका भी संकेत शिवप्रसाद सिंह के "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में किया गया है। भारतीय सैनिक गुप्तचर विभाग का एक अधिकारी कैप्टन मोहन सिंह विवेक से कहता है - "पत्रकार है न मिस रोज़। इन लोगों को समाचार चाहिए। घबरादेनेवाले समाचार। क्यों साहब। कुछ मिली खबरें, जो अखबारों की "हेड़ लाइन्स" बनकर चीख सकें। समूचे देश में हौलदिली पैदाकर दे। पत्रकार युध्द के मोर्चे पर, खबरें जो तोपों ने उगलीं, लपटे जो शत्रुओं की साँसों से जलीं आदि, आदि।"[24]

लेकिन "घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में चित्रित विवेक कुमार राय एक ऐसा भारतीय रिपोरटर है , जो स्वयं युध्दस्थल पर जाकर जानकारी प्राप्त करता है और उन खबरों को समाचार पत्र के लिए प्रेषित करता है। देखी हुई घटनाओं को अपनी डायरी में दर्ज भी करता है। कैप्टन विवेक के विचारों से सहमत होकर भी वह यह भी बताताा है कि उसने जो खबरें भेजी हैं वह सत्य पर आधारित हैं।

"घाटियाँ गूंजती हैं" नाटक में चीन के भारत पर हुए आक्रमण का वर्णन है। और इस आक्रमण के संदर्भ में चीनियों को युध्दनीति पर आँखों देखी हाल का

वर्णन विवेक कुमार राय करता है जो रिपोरटर है। कैप्टन से बातचीत करते समय वह कहता है कि चीनियों की यह युध्दनीति है कि भारत के सीमांचल प्रदेश में कुछ नकली लामाओं और कुछ असली लामाओं को भेज दिया गया था। रिपोरटर विवेक कहता है कि तवाँग विहार पर अधिकार करने के बाद चीनियों ने इन लामा लोगों को युध्द का नाटक रचने के लिए विवश किया था। चीन के युध्दनीति पर प्रकाश डालते हुए रिपोरटर विवेक यह भी बताता है कि इन बौध्द भिक्षुओं को अपने धार्मिक भजन गाते हुए पितल के घंटे बजाते हुए आगे-आगे चलने का आदेश दिया गया था। प्रस्तुत घटना में यह भी उल्लेखनीय है कि एक बौध्द भिक्षु घायल होने पर भी चीनियों की युध्दनीति का राज घबराकर बताने के लिए राजी नहीं हुआ बल्कि दुःखी होकर मर गया। इस प्रकार चीनी लोग भारत में धर्म के नाम पर युध्द करना चाहते हैं और अपने ही बौध्द धर्मगुरूओं का, लामाओं का नाश करते हैं। इस प्रकार विवेक कुमार राय एक आदर्श संवाद दाता दिखाया गया है।

डॉ॰रामकुमार वर्मा लिखित "जय बाड़ला" नाटक में रिपोर्टर की कर्तव्य दक्षता पर प्रकाश डाला गया है । पाकिस्तानी सैनिक बांगला में लूटमार करने के लिए गए हैं। बलुचिस्तान का सिपाही फिरोज खाँ चौकी पर पहरा दे रहा है। इतने में अखबार का रिपोर्टर शिशिर दा पाकिस्तानी चौकी में कुछ जानकारी मिलेगी इसलिए आ जाता है। फिरोज खाँ से मुलाकात होते ही मालूम हुआ कि बंगाली लोग इस्लामी लोगों पर अन्याय कर रहे हैं। इसलिए वह बांगला की तरफ आए। मगर यहाँ स्थिति बराबर विरूध्द थी। पाकिस्तान के सैनिक ही बांगला देश पर अत्याचार कर रहे थे। छः बरस की लडकी सकीना के बारें में दया की भावना उदित होने के कारण फिरोज खाँ उसे शिशिर दा के हवाले करना चाहता है। तभी बलुचिस्तान सिपाहियों की नेकनियती को अखबार में छापकर अपना कर्तव्य पूरा करना चाहता है। यह बातें शिशिर दा के शब्दों में - "इस बात को तो नहीं छापूंगा पर यह छापूंगा कि बलुचिस्तान के सिपाही बहुत बहादुर होते हैं। वो सच्चे इन्सास हैं हिम्मतवार हैं जंग में लड़ाई लडना जानते हैं। चोरी से लूट नहीं करते ? बिना हथियार के लोगों पर गोली नहीं चलाते। बहुत बहादुर हैं। बहुत

बहादुर है बहुत बहादुर है।"[25] इसप्रकार शिशिर दा आदर्शवादी रिपोर्टर दिखाया गया है।

"युध्दमन" नाटक में नाटककार बृजमोहन शाह ने आज के समाचार पत्र संवाद-दाता पर संक्षेप में प्रकाश डाला है। इस नाटक के छठे दृश्य में यह दर्शाया गया है कि दो बूढ़े पति-पत्नी अपने घर में बैठकर युध्दजन्य स्थिति के समाचार सुन रहे हैं। वे कुछ घबरा गए हैं। इतने में तार आ जाता है और उस तार में लिखा गया है कि बूढ़े के छोटे बेटे को ड़ेकोरेशन मिला है और बूढ़ा अपने पत्नी से यह भी कहता है कि दिलेरी का इनाम किसी न किसी को ही मिलता है उस पर बूढ़िया कहती है कि कौन लेगा उस इनाम को ? कौन सजेगा इस इनाम से। इतने में घंटी बजती है और संवाददाता आ जाता है और बूढे पति-पत्नी का अभिनंदन करता है और तत्पश्चात उन दोनों की कुछ जानकारी लेकर उनका फोटो भी छापना चाहता है। इतनें में दो संकटकालीन स्वयंसेवक भी उस घर में प्रवेश करते हैं और वे भी संवाद दाता से अनुरोध करते हैं कि उनका फोटो समाचार पत्र में छापा जाय। लेकिन संवाद दाता उन स्वयंसेवक का फोटो नहीं छापना चाहता है। आखिर उस संघर्ष में बूढ़ों के साथ स्वयंसेवकों का भी फोटो निकाला जाता है। तत्पश्चात सवांददाता उन बूढ़े पति-पत्नी का इंटरव्यू लेना चाहता है लेकिन उनके द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों के उत्तर न बूढ़ा देता है न बूढ़ी देती है बल्कि दो स्वयंसेवक ही देत हैं। निम्नलिखित वार्तालाप देखिए -

प्रेस का. : (फोटो लेकर) थैंक्यू वेरी मच। मेरा एक काम तो हो गया।
: (बूढे से) अच्छा तो आप सबसे पहले यह बताइये कि आपने ऐसे योध्दा बेटे पैदा कैसे किये ? आई मीन उन्हें ट्रेण्ड कैसे किया ?

स्वयं·एक : इनके सिर्फ तीन बेटे हुए।

स्वयं ·दो : तीनों बड़े क़ाबिल।

प्रेस·का· : मैं आपसे नहीं, पूछ रहा हूँ, मेहरबान।
(बूढे बूढिया से) हाँ, तो आपने उन्हें कैसे ट्रेंण्ड किया ?

स्वयं·दो· : शुरू में इनकी हालत बहुत तंग थी।

स्वयं·एक : तीनों बेटे हाईस्कूल करके फौज में भरती हो गये।

प्रेस का· : मैं आपसे नहीं पूछ रहा हूँ, मेरहबान। चुप होकर बैठिये। मुझे अख़बारात के लिए सही और सच्ची खबर चाहिए।[26]

इसप्रकार "युध्दमन" नाटक में एक महत्वपूर्ण बात बताई गई है कि बूढ़े पति-पत्नी अपने बेटों की जारी युध्द में क्या हालत हुई होगी यह सोचकर घबरा गई हैं और संवाद दाता तथा संकटकालीन स्वयंसेवक अपना अपना उल्लू सिधा करने की कोशिश करते हैं। इसमें संदेह नहीं कि उन बूढ़ों का फोटो सही है लेकिन मुलाकात झूठी है क्योंकि वे दोनों संवाद दाता के एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं देते हैं केवल स्वयंसेवक ही उत्तर देते हैं। इस प्रकार झूठी मुलाकात भी समाचार पत्र में छापी जाने की संभावना संकेतित की है।

अ· **युध्द के दुष्परिणाम**

"युध्दमन" नाटक का प्रथम दृश्य अदालत का है। इसमें नाटककार ने वकील, सरकारी वकील, प्रिजाइडिंग ऑफिसर, इकोनोमिस्ट, साइंटिस्ट, डिफेन्स, काउंसिलर की माध्यम से आज की युध्दनीति पर प्रकाश डाला है। इस दृश्य में यह दिखाया गया है कि आज का युध्द थर्मोन्यूक्लिअर का युध्द है। इस युध्दके परिणाम पर साइंटिस्ट प्रकाश ड़ालते हुए कहता है कि एक मेगाटन हाइड्रोजन की बम से आँखे नष्ट हो सकती हैं। जिनके तन बदन पर उकसी कौंध(प्रकाश) पड़ेगी। वह जलन से चिखों पुकार मचाने लगेंगे। उसकी गर्मी छः से दस मील तक पहुँच सकती है, जिसकी वजह से वहाँ तक का आदमी झुलस जा सकता है। यह एक प्रकार का भयंकर अग्निकांड होगा और यह अग्निकांड इमारतें, पेडों आदि को जड़ से उखाड़ फेंक सकता है। गाडियों, जहाजों में बवंड़र फैल सकता है। घर बाहर लोगों के अंबार होंगे और दफ़नाने के लिए न आदमी होगा न जगह होगी1 इस अग्निकांड में जो कुछ बच जाएंगे वे लुंज-पुंज विकलांग या मानसिक रोगी बन जाएंगे।

बृजमोहन शाह ने "युध्दमन" नाटक में यह दिखाया गया है कि देश की हिफ़ाजत करनेवाले सार्जेण्ट को भी दुकानदार जरूरत की चीजें बेचने के लिए तैयार नहीं होते हैं। जब सार्जेण्ट युध्दभूमि पर जाने के लिए निकलता है तब दो-चार दिन का इंतजाम कर जाने की सोचता है और थोडीसी चीनी खरीदना चाहता है। लेकिन उस समय दुकानदार साफ कहता है - "चीनी ? चीनी तो खत्म हो गई।"[27] सामान्य जनता को भी चीनी और मिट्टी का तेल जादा रेट पर भी दुकानदार नहीं देते हैं। यहाँ नाटककार ने यह स्पष्ट किया है कि युध्दों में दुकानदार फिजूल मुनाफ़ा प्राप्त करने की कोशिश करते हैं और सामान्य जनता का शोषण करते हैं।

युध्दजन्य परिस्थिति का असर केवल सामान्य जनता पर पड़ता है ऐसी बात नहीं। उसका असर सैनिकों पर भी पड़ता है। कुछ सैनिक युध्द में मारे जाते हैं, कुछ सैनिक अपनी जान बचाने के लिए भाग दौड़ करते रहते हैं, तो कुछ सैनिकों को दो दिन से पानी भी नहीं मिलता हैं। जिसकी वजह से वे तरसते तड़पते रहते हैं और अगर थोडासा पानी किसी बोतल में बच गया हो तो उसे पाने के लिए सैनिकों में आपस मे छिना छपटी होती है।

इतना ही नहीं एखाद सैनिक की यह भी हालत होती है कि उन्हें अपनी बीवी की डिलीवरी के लिए भी छुट्टी नहीं मिल पाती है बल्कि मेजर उसे डाँटता रहता है - "ब्लडी फूल। इडियट। वार फ़ील्ड को खाला का घर समझ रखा है।"[28]

प्रस्तुत नाटक में यह भी दिखाया गया है कि कोई सैनिक अपने पत्नी के प्रति प्यार करते हुए विवश होकर दूसरे सैनिक से यह भी कहता है- "अगर तू क़िस्मत से बचकर वापस चला गया तो मेरी बीवी से शादी कर लेना।"[29] इसमें संदेह नहीं कि नाटककार ने सैनिकों की व्यक्तिगत जीवन पर और दुःख पर प्रकाश डालकर उनकी नीजि स्थितियों को स्पष्ट किया है।

10· **युध्द समस्या और बुध्दिजीवी।**

प्रत्येक देश के सामाजिक संरचना में बुध्दिजीवी वर्ग का एक विशिष्ट स्थान माना जाता है लेकिन जब देश पर कोई संकट गिर जाता है तब बुध्दिजीवी उस संकट में सक्रिय सामिल नहीं होते हैं। विशेषतः युध्दजन्य स्थिति में यह देखा जाता है कि युध्द के समय बुध्दिजीवी केवल भाषण करते रहते हैं या पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखते रहते हैं लेकिन युध्दजन्य स्थिति में युध्दस्थल जाकर सेना के पास जाकर दिलासा देना विश्वास संपादन करना आदि में वे काफ़ी दूर रहते हैं। "घाटियां गूँजती हैं" नाटक में नाटककार शिवप्रसाद सिंह ने गुप्तचर अधिकारी, संवाददाता प्रतिनिधी विवेक के मुँह से इस बात की ओर संकेत किया है कि जनता को विश्वास दिलाने का काम बुध्दिजीवियों को करना चाहिए। सामान्य जनता के साथ नेता, शासक और समाज का बुध्दिजीवी वर्ग जब उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रह सकते हैं तो ही यह विश्वास स्थापित हो सकता है विवेक के शब्दों में - "काली से काली रात में भी जनता के विश्वास का ध्रुव कभी धूमिल नहीं होता।। यदि केवल उसे भरोसा हो कि उसके नेता, उसके शासक और समाज का बुध्दिजीवी वर्ग उसके साथ कंधे से कंधा मिलाया खड़े हैं।"[30]

"युध्दमन"नाटक में नाटककार ने बुध्दिजीवी लोगों पर करारा व्यंग्य किया है। बुध्दिजीवी लोग वस्तुतः युध्दजन्य स्थिति में कुछ भी ठोस काम नहीं करते हैं।। बल्कि युध्द विराम करने के लिए केवल "रेज्युलेशन" पास करने की सोचते हैं। प्रस्तुत नाटक में विश्व के बुध्दिजीवीयों की सभा का आयोजन दिखाया गया है और उनकी खिल्ली उड़ाई गयी है। चेयरमन शिप के लिए बुध्दिजीवीयों में बहस होती है कोई किसी का नाम प्रपोज करना चाहता है तो कोई अनुमोदन के लिए हाथ बढ़ाते हैं। चेयरमन के लिए नाम प्रपोज करना और अनुमोदित करने में दिलचस्पी दिखानेवालों पर जो व्यंग्य किया है वह रंगमंचीयता का एक उत्कृष्ट प्रमाण है। बुध्दिजीवी और प्रेक्षकों के बीच हुआ वार्तालाप बड़ा ही व्यंग्यपूर्ण है -

बुध्दिजीवी : इन दो नामों से आप किसीको सेकिन्ड करते हैं ?
प्रेक्षक 3 : मै इनका नाम प्रपोज करता हूँ।
प्रेक्षक 4 : मैं उनका नाम प्रपोज करता हूँ।
प्रेक्षक 3 : मैं इनका नाम प्रपोज करता हूँ।
बुध्दिजीवी : कोई किसी नाम को सेकिण्ड भी करेगा। या सब प्रपोज़ ही करेंगे?
प्रेक्षक 1 : मैं इनके नाम को सेकिण्ड करता हूँ।
प्रेक्षक 2 : मैं उनके नाम को सेकिण्ड करता हूँ।
प्रेक्षक 3 : मैं इनके नाम को सेकिण्ड करता हूँ।
प्रेक्षक 4 : मैं उनके नाम को सेकिण्ड करता हूँ।

इस शोर के पश्चात कुछ समय के लिए मौन रहता है।"[31]

11. **युध्द विरोध और युध्दविराम**

"युध्दमन" नाटक में बुध्दिजीवियों के खोखलेपन पर बड़ा ही व्यंग्य कसा है। साधारणतः इस बुध्दिजीवियों में , फ़िलासफ़र्स, आर्टिस्टस्, साइंटिस्टस् का समावेश नाटककार ने किया है और दर्शाया है कि ये लोग युध्द से नफ़रत करते हैं और युध्दविराम हो इस प्रकार का प्रस्ताव पारित करने के लिए प्रयत्न करते हैं। लेकिन यह सब कागजी घोड़े होने के कारण सामान्य जनता प्रेक्षक के रूप में उनकी खिल्ली उड़ाती है और ऐसे बुजुर्गो के प्रति एक तरह से अपनी नफ़रत ही व्यक्त करते हैं। उनकी बातें सामान्य जनता नहीं मानती है और कुछ सुनना भी नहीं चहाती है और नारे लगाते हुए कहती है - "नहीं। बुर्जुआ, हाय-हाय। बुर्जुआ, हाय-हाय। बुर्जुआ, हाय-हाय।"[32]

आधुनिक युध्द विराम पर यह कड़ा व्यंग्य है। इसमें कोई संदेह नहीं है। आज की राजनीति ही इस तरह है। युध्द विरोध और युध्द विराम शब्दप्रयोग केवल बाहरी दिखावे के ही द्योतक हैं। आज कल होनेवाले "शीत युध्दों" को भूला नहीं जा सकता।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि -

1· भारत के पड़ोसी देशों - पाकिस्तान, चीन, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बर्मा में से चीन और पाकिस्तान द्वारा स्वतंत्र भारत पर किए गए आक्रमण का वर्णन विवेच्य नाटकों में सर्वप्रमुख रहा है।

2· भारत के पड़ोसी विदेशी देशों ने मुख्यतयः स्वतंत्र भारत के जम्मू कश्मीर तथा नेफा के प्रदेशों पर हमला किया है। जम्मू कश्मीर पर पाकिस्तान ने तथा नेफा पर चीन ने हमले किये हैं। वास्तव में पूर्वी बंगाल पाकिस्तान का ही हिस्सा होने पर वहाँ भाषा तथा रहन-सहन संबंधी संघर्ष के कारण पाकिस्तान ने बांगला देश पर हमला किया है।

3· भारत ने बांगला देश की सहायता करने पर पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया है।

4· विवच्य नाटकों में विदेशी आक्रमणों का विस्तृत चित्रण दिखाई देता है।

5· विवेच्य नाटकों में युध्द की जिम्मेदारी, युध्द की तैयारियां, युध्दनीति के विविध आयाम, युध्द में लूटमार, युध्द में बहादुरी, युध्द में हार-जीत, युध्द में जासूसी, युध्द में रिपोर्टर आदि पर प्रकाश डाला गया है।

6· साथ ही साथ युध्द के दुष्परिणाम, युध्द की समस्या और बुध्दिजीवी तथा युध्द विरोध और युध्द विराम को भी चित्रीत करने में नाटककार सफल हुए हैं।

7· नाटककारों ने विदेशी आक्रमणों का यथार्थवादी तथा कलात्मक चित्रण प्रस्तुत कर साहित्यकार के दायित्व को निभाया है।

संदर्भ

1· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेवी अग्निहोत्री, पृ·109 , सप्त·संस्क·1980

2· हाजीपीर का दर्रा - राजकुमार, पृ·16-17 , दि·संस्क·1970

3· जय बाड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा, पृ·47, प्र·संस्क·1971

4· युध्दमन - बृजमोहन शाह, पृ·21, प्र·संस्क·1976

5· वही। पृ·62

6· नेफा की एक शाम - ज्ञानेदवी अग्निहोत्री। पृ·62। सप्त·संस्क·1980

7· हाजीपीर का दर्रा - राजकुमार पृ·48 द्वि·संस्क·1970

8· जय बाड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा पृ·57, प्र·संस्क - 1971

9· युध्दमन - बृजमोहर शाह, पृ·85 . प्र·संस्क"-1976

10· घोटियाँ गूंजती हैं - डॉ·शिवप्रसोद सिंह, पृ·27, तृ·संस्क·1965

11· हाजी पीर का दर्रा - राजकुमार, पृ·66, द्वि संस्क "-.1970

12· वही। पृ·6

13· जय बांड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा। पृ·35। प्रसंस्क 1971

14· हाजीपीर का दर्रा - राजकुमार। पृ·22। द्वि संस्क"-1970

15· जय बांड़ला - डॉ·रामकुमर वर्मा। पृ·39 प्र संस्क·1971

16· हाजीपीर का दर्रा - राजकुमार, पृ·11, द्वि·संस्क·1970

17· वही। पृ·62

18· पाकिस्तान की पराजय - आनंद जैन, पृ·24, संस्क·अनुल्लेख्य

19· युध्दमन - बृजमोहन शाह, पृ·101, प्र·संस्क·1976

20· घाटियाँ गूँजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·45 , तृ·संस्क·1965

21· नेफा की एक शाम - ज्ञानदेव अग्निहोत्री। सप्त·संस्क·1980

22· हाजीपीर का दर्रा - राजकुमार, पृ·34, द्वि·संस्क·1970

23· वही। पृ·61

24· घाटियाँ गूंजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·92, तृ·संस्क·1965

25· जय बांड़ला - डॉ·रामकुमार वर्मा, पृ·37, प्र संस्क·1971

26· युध्दमन - बृजमोहन शाह, पृ·59-60, प्र संस्क·1976

27· वही। पृ·63

28· वही। पृ·76

29· वही, पृ·79

30· घाटियाँ गूंजती हैं - डॉ·शिवप्रसाद सिंह, पृ·28, तृ·संस्क·1965

31· युध्दमन - बृजमोहन शाह, पृ·87, प्र·संस्क·1976

32· वही, पृ·89